बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन : 100

संस्कृत (कक्षा : 10)

पढ़ेगा राजस्थान

बढ़ेगा राजस्थान

कार्यालय : संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

Created by Universal Document Converter

संयोजक कार्यालय - संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन - 100 मार्गदर्शक

पितराम सिंह
संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चूरू संभाग, चूरू

महेन्द्र सिंह बड़सरा
सहायक निदेशक
संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

संकलनकर्त्ता टीम - संस्कृत

सुशीला चौधरी
रा.उ.मा.वि.खिलेरिया

सुरेश कुमार मीणा
रा.उ.मा.वि. रामसिंहपुरा

भूपेन्द्र गौतम
रा.उ.मा.वि.जोरावर नगर, श्रीमाधोपुर

डॉ. देवेन्द्र सिंह
रा.उ.मा.वि.गोकुलपुरा

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, संयुक्त निदेशक कार्यालय - चूरू संभाग, चूरू (राजस्थान)

Created by Universal Document Converter

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थानम् अजमेर
मॉडल प्रश्न पत्र, परीक्षा–2023
कक्षा–10
विषयः – संस्कृत (तृतीयभाषा) (71)

समयः– 3 घंटा 15 मिनट (सपाद होरात्रयम्)

अंकाः– 80

1. उद्देश्यानाम् अंकभारः –

क्र.सं.	उद्देश्यम्	अंकभारः	प्रतिशतम्
1.	ज्ञानम्	12	15%
2.	अवबोधः	13	16.25%
3.	अभिव्यक्तिः	41	51.25%
4.	मौलिकता	14	17.50%
	योगः	**80**	**100%**

2. प्रश्नानां प्रकारानुसारम् अंकभारः– –

क्र. सं.	प्रश्नानां प्रकाराः	प्रश्नानां संख्याः	प्रतिप्रश्नम् अंकाः	कुलांकाः%	प्रश्नानां प्रतिशतम्	सम्भावितः समयः
1.	वस्तुनिष्ठ–प्रश्नाः	18	1	22.5	36%	20
2.	अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नाः	12	1	15	24%	25
3.	लघूत्तरात्मक–प्रश्नाः	13	2	32.5	26%	35
4.	दीर्घोत्तरीय–प्रश्नाः	4	3	15	08%	55
5.	निबंधात्मक–प्रश्ना	3	4	15	06%	60
	योगः	**50**	**11**	-	**100%**	**195**

3. विषयवस्तूनाम् अंकभारः –

क्र.सं.	विषयवस्तूनि	अंकभारः	प्रतिशतम्
1	पाठ्यपुस्तकात् गद्यांशस्य हिन्दीभाषया सप्रसगंम् अनुवादः	3	3.75
2	पाठ्यपुस्तकात् पद्यांशस्य हिन्दीभाषया सप्रसगंम् अनुवादः	3	3.75
3	पाठ्यपुस्तकात् नाट्यांशस्य हिन्दीभाषया सप्रसगंम् अनुवादः	3	3.75
4	पाठ्यपुस्तकात् पद्यांशस्य सूक्तवचनस्य वा संस्कृते भावार्थ लेखतं	2	2.5
5	संस्कृतमाध्यमेन प्रश्नोत्तराणि – एकपदेन पूर्णपदेन च	8	10
6	अन्वय लेखनम्	2	2.5
7	प्रश्न निर्माण्म्	2	2.5
8	एकस्य गद्यपाठस्य हिन्दी भाषायां सारलेखनम्	2	2.5
9	पाठप्रसंगानुसारं शब्दार्थचयनम्	1	1.25
10	पाठ्यपुस्तकात् श्लोकदयं लेखनम्	2	2.5
11	अपठितावबोधनम्	9	11.25
12	अनुप्रयुक्त व्याकरणम्	28	35
13	संकेताधारितम् औपचारिकम् अथवा अनौपचारिकं पत्र लेखनम्	4	5
14	चित्राधारितं वर्णनम् अथवा संकेताधारितं वार्तालापलेखनम्	4	5
15	अनुवाद कार्यम्	4	5
16	घटनाक्रमस्य संयोजनम् अथवा शुल्देषु वाक्य निर्माणम्	3	3.75

Created by Universal Document Converter

प्रश्न–पत्रस्य नीलपत्रम् (ब्ल्यू प्रिन्ट)

कक्षा–10 विषय : संस्कृत, (तृतीयभाषा) (71) पूर्णांक – 80

क्र. सं.	उद्देश्यानां विधा:/उपविधा:	ज्ञानम्					अवबोध:					ज्ञानोपयोग:/अभिव्यक्ति:					कौशलम्/मौलिकता					योग:
		वस्तुनिष्ठ:	अतिलघु	लघूत्तरात्मक	दीर्घोत्तरीय	निबन्धात्मक	वस्तुनिष्ठ:	अतिलघु	लघूत्तरात्मक	दीर्घोत्तरीय	निबन्धात्मक	वस्तुनिष्ठ:	अतिलघु	लघूत्तरात्मक	दीर्घोत्तरीय	निबन्धात्मक	वस्तुनिष्ठ:	अतिलघु	लघूत्तरात्मक	दीर्घोत्तरीय	निबन्धात्मक	
1	पाठ्यपुस्तकात् गद्यांशस्य हिन्दीभाषया सप्रसंगम् अनुवाद:										3(1)											3(1)
2	पाठ्यपुस्तकात् पद्यांशस्य हिन्दीभाषया सप्रसंगम् अनुवाद:										3(1)											3(1)
3	पाठ्यपुस्तकात् नाट्यांशस्य हिन्दीभाषया सप्रसंगम् अनुवाद:										3(1)											3(1)
4	पाठ्यपुस्तकात् पद्यांशस्य सूक्तवचनस्य वा संस्कृते भावार्थ लेखतं													2(1)								2(1)
5	संस्कृतमाध्यमेन प्रश्नोत्तराणि – एकपदेन पूर्णपदेन च	5(5)											3(3)									8(8)
6	अन्वय लेखनम्													2(1)								2(1)
7	प्रश्न निर्माणम्													2(1)								2(1)
8	एकस्य गद्यपाठस्य हिन्दी भाषायां सारलेखनम्													2(1)								2(1)
9	पाठप्रसंगानुसारं शब्दार्थचयनम्		1(1)																			1(1)
10	पाठ्यपुस्तकात् श्लोकद्वयं लेखनम्								2(1)													2(1)
11	अपठितावबोधनम्												9(9)									9(9)
12	अनुप्रयुक्त व्याकरणम्		6(6)						2(1)				2(2)	18(9)								28(18)
13	संकेताधारितम् औपचारिकम् अथवा अनौपचारिकं पत्र लेखनम्																				4(1)	4(1)
14	चित्राधारितं वर्णनम् अथवा संकेताधारितं वार्तालापलेखनम्																				4(1)	4(1)
15	अनुवाद कार्यम्																				4(1)	4(1)
16	घटनाक्रमस्य संयोजनम् अथवा शुद्धेषु वाक्य निर्माणम्														3(1)							3(1)
		5(5)	7(7)	-	-	-	-	-	4(2)	-	9(3)		14(14)	26(13)	3(1)	-	-	-	2(1)	-	12(3)	80(50)
	सर्वयोग:	12(12)					13(5)					43(28)					14(4)					80(62)

विकल्प–योजना :– प्र.सं. 1,2,3,4,5,22,23,25 एतेषु प्रश्नेषु एक आंतरिक विकल्प: अस्ति।

अवधेयम्– कोष्ठकात् बहि: संख्या अंकोबोधिका आंतरिकसंख्या च प्रश्नोबोधिका।

Created by Universal Document Converter

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र. 1. केषां माला रमणीया?
(अ) ललितलतानाम् (ब) पुष्पाणाम्
(स) मौक्तिकानाम् (द) रुप्यकाणाम् (अ)

प्र. 2. अद्य धरातलं कीदृशं जातम्?
(अ) निर्मलम् (ब) शुद्धम्
(स) पवित्रम् (द) समलम् (द)

प्र. 3. का रसालं मिलिता?
(अ) कुसुमावलिः (ब) भ्रमरपंक्तिः
(स) नवमालिका (द) चटका (स)

प्र. 4. अत्र जीवितं कीदृशं जातम्?
(अ) सरलम् (ब) सुखदम्
(स) उत्तम (द) दुर्वहम् (द)

प्र. 5. कुत्सित वस्तुमिश्रितं किं जातम्?
(अ) जलम् (ब) भक्ष्यम्
(स) वायुमण्डलम् (द) कूपम् (ब)

प्र. 6. 'बुद्धिर्बलवती सदा' इति पाठः कस्माद् ग्रन्थात् संकलितः?
(अ) काकल्याः (ब) कथासंग्रहात्
(स) शुकसप्ततेः (द) लसल्लतिकायाः (स)

प्र. 7. भयाकुलं व्याघ्रं दृष्टवा कः हसति?
(अ) बुद्धिमती (ब) शृगालः
(स) मृगः (द) राजसिंह (ब)

प्र. 8. राजसिंहः कस्मिन् ग्रामे वसति स्म?
(अ) कामाख्ये (ब) देउलाख्ये
(स) प्रयागे (द) राजपुरे (ब)

प्र. 9. किं दृष्टवा बुद्धिमती चिन्तितवती?
(अ) व्याघ्रं (ब) जम्बुकं
(स) चित्रकं (द) सूकरं (अ)

प्र. 10. भामिनी भयात् कया विमुक्ता?
(अ) बलेन (ब) पराक्रमेण
(स) धनेन (द) निजबुद्ध्या (द)

प्र. 11. परमम् आरोग्यं कस्मात् उपजायते?
(अ) आलस्यात् (ब) व्यायामात्
(स) बलात् (द) भोजनात् (ब)

प्र. 12. सदा कः पथ्यः?
(अ) वितम् (ब) बलम्
(स) व्यायामः (द) श्रमः (स)

प्र. 13. कियता बलेन व्यायामः करणीयः?
(अ) पूर्ण (ब) अल्प
(स) अर्ध (द) अधिकाधिक (स)

प्र. 14. 'व्यायामः सर्वदा पथ्यः' इति पाठस्य लेखकः कः?
(अ) पतञ्जलिः (ब) चरकः
(स) वेदव्यासः (द) सुश्रुतः (द)

प्र. 15. व्यायामाभिरतस्य किं स्थिरं भवति?
(अ) देहम् (ब) मांसम्
(स) बलम् (द) रूपम् (ब)

प्र. 16. कुशलवौ कम् उपसृत्य प्रणमतः?
(अ) रामम् (ब) वाल्मिकी
(स) लक्ष्मणम् (द) विदूषकम् (अ)

प्र. 17. लवकुशयोः वंशस्य कर्ता कः?
(अ) सूर्यः (ब) चन्द्रः
(स) वशिष्ठः (द) हरिश्चन्द्रः (अ)

प्र. 18. कुशः स्वपितुः किन्नाम् कथयति?
(अ) निकृष्टः (ब) निर्दयी
(स) निरनुक्रोशः (द) निर्लिप्तः (स)

प्र. 19. 'शिशुलालनम्' इति पाठः कुतः सङ्कलितः?
(अ) कुन्दमालातः (ब) अभिज्ञानशाकुन्तलतः
(स) रामायणत (द) महाभारतः (अ)

प्र. 20. वयोऽनुरोधात् कः लालनीयः भवति?
(अ) शिशुजनः (ब) पुत्रः
(स) पिता (द) मित्रम् (अ)

प्र. 21. माता सुरभिः किमर्थम् अश्रूणि मुञ्चति स्म?
(अ) पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा
(ब) कृषीवलस्य अत्याचार दृष्ट्वा
(स) जगतः पीडां दृष्ट्वा (द) स्वविवशतां दृष्ट्वा (अ)

टेलीग्राम चैनल ज्वाइन करें

Created by Universal Document Converter

प्र. 22. 'जननी तुल्यवत्सला' इति पाठस्य मूलग्रन्थः कः?
(अ) रामायणम् (ब) कादम्बरी
(स) हर्षचरितम् (द) महाभारतम् (द)

प्र. 23. सर्वेषु अपत्येषु जननी कीदृशी भवेत?
(अ) कातरा (ब) प्रसन्ना
(स) तुल्यवत्सला (द) मुदिका (स)

प्र. 24. कस्याः नेत्राभ्यामश्रूणि आविरासन्?
(अ) वृषभस्य (ब) इन्द्रस्य
(स) कृषकस्य (द) सुरभेः (द)

प्र. 25. 'जननी तुल्यवत्सला' इति पाठः महाभारतस्य कस्मात् पर्वणः उद्धृतः?
(अ) विराट (ब) वन
(स) भीष्म (द) कर्ण (ब)

प्र. 26. गुणी किं वेति?
(अ) धनं (ब) गुणं
(स) ज्ञानं (द) आचारं (ब)

प्र. 27. किं कृत्वा मनुष्यः नावसीदतिः?
(अ) युद्धम् (ब) धनार्जनम्
(स) तपः (द) उद्यमम् (द)

प्र. 28. मनुष्याणां शरीरस्थः महान् रिपुः कः?
(अ) बलम् (ब) श्रमः
(स) आलस्यम् (द) स्फूर्तिः (स)

प्र. 29. मालाकारेण निदाघे कस्य पुष्टिः व्यरचि?
(अ) तरोः (ब) पतङ्गाः
(स) मेघाः (द) भ्रमराः (अ)

प्र. 30. ज्वालामुखविस्फोटैः गगनं कीदृशं जायते?
(अ) धूमभस्मावृतम् (ब) कृष्णम्
(स) श्वेतम् (द) पीतम् (अ)

प्र. 31. प्राणेभ्योऽपि किं रक्षेत्?
(अ) सदाचारम् (ब) धनम्
(स) पुत्रम् (द) गृहम् (अ)

प्र. 32. कः वातावरणं कर्कशध्वनिना आकुलीकरोति?
(अ) काकः (ब) पिकः
(स) उल्लूकः (द) बकः (अ)

प्र. 33. कीदृशे प्रदेशे पदयात्रा न सुखवहा?
(अ) विजने प्रदेशे (ब) शीतप्रदेशे
(स) उष्णप्रदेशे (द) हिमदेशे (अ)

प्र. 34. पिता पुत्राय बाल्ये किं यच्छति?
(अ) विद्याधनम् (ब) स्वर्णम्
(स) रजतम् (द) भोजनम् (अ)

प्र. 35. कः पिपासितः म्रियते?
(अ) चातकः (ब) काकः
(स) बकः (द) पिकः (अ)

प्र. 36. कः आत्मानं बलशाली, विशालकायः पराक्रमी च कथयति?
(अ) गजः (ब) सिंहः
(स) वानरः (द) व्याघ्रः (अ)

प्र. 37. विमूढधीः कीदृशीं वाचिं परित्यजति?
(अ) धर्मप्रदाम् (ब) माधुर्यप्रदाम्
(स) सुखप्रदाम् (द) दुःखप्रदाम् (अ)

प्र. 38. कस्य उपशमनस्य स्थिरोपायः नास्ति?
(अ) भूकम्पस्य (ब) क्षुधायाम्
(स) तृष्णायाम् (द) निंद्रायाम् (अ)

प्र. 39. कस्य शोभा एकेन राजहंसेन भवति?
(अ) सरसः (ब) आकाशः
(स) पृथ्वी (द) उद्यानः (अ)

प्र. 40. चण्डवातेन मेघरवैश्य सह कः समजायत?
(अ) प्रवर्षः (ब) खगः
(स) प्रकाशः (द) तिमिरः (अ)

प्र. 41. क निकषा मृत शरीरम् आसीत्?
(अ) राजमार्गम् (ब) विद्यालयम्
(स) देवालयम् (द) न्यायालयं (अ)

प्र. 42. वनराजः कै दुरावस्थायाम् प्राप्तः?
(अ) तुच्छजीवैः वानरैः (ब) बकैः
(स) चातकैः (द) काकैः (अ)

प्र. 43. अस्मिन् लोके के एव चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः?
(अ) विद्वांसः (ब) दुर्जनः
(स) सज्जनः (द) सन्तः (अ)

प्र. 44. किं दोषम् उत्पादयति?
(अ) प्रच्छादनम् (ब) उत्साहम्
(स) ज्ञानम् (द) विद्या (अ)

प्र. 45. के रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते?

Created by Universal Document Converter

(अ) भ्रमरा: (ब) मक्षिका:
(स) खगा: (द) पतङ्गा: (अ)

प्र. 46. सरस: तीरे के वसन्ति?
(अ) बकसहस्रम् (ब) सर्व:
(स) उल्लूक: (द) काक: (अ)

प्र. 47. चन्दनदासस्य वाणिज्या कीदृशी आसीत्?
(अ) अखण्डिता (ब) खण्डिता
(स) भ्रष्टा (द) व्यग्र: (अ)

प्र. 48. कीदृशा: प्राणिन: भूकम्पेन निहन्यते?
(अ) विवशा: (ब) सम्पन्ना:
(स) दुखिना: (द) सुखिना (अ)

प्र. 49. वाचि किं भवेत्?
(अ) अवक्रता (ब) वकृता
(स) सरलता (द) उग्रता (अ)

प्र. 50. कुशकाय: क: आसीत्?
(अ) अभियुक्त: (ब) आरक्षी
(स) न्यायाधीश (द) गृहस्थी (अ)

प्र. 51. क: शङ्कनीय: भवति?
(अ) अत्यादर: (ब) अनादर:
(स) अट्टाहास: (द) साहस: (अ)

प्र. 52. बक: कीदृशान् मीनान् क्रूरतया भक्षयति?
(अ) वराकान् (ब) क्रुद्धान्
(स) सुप्तान् (द) धूतनि् (अ)

प्र. 53. अतिथि केन प्रबुद्ध:?
(अ) पादध्वनिना (ब) चण्डवातेन
(स) प्रवर्षेन (द) भूकम्पेन (अ)

प्र. 54. चाणक्य: कं द्रष्टुम् इच्छति?
(अ) चन्दनदासम् (ब) गृहजनम्
(स) अमात्यम् (द) चन्द्रगुप्तम् (अ)

प्र. 55. काक: कस्य सन्ततिं पालयति?
(अ) पिकस्य (ब) बकस्य
(स) सिंहस्य (द) चातकस्य (अ)

प्र. 56. 'विचित्र साक्षी' इति कथाया: लेखक: क:?
(अ) ओमप्रकाश ठाक्कुर: (ब) विशाखदत:
(स) शूद्रक: (द) विष्णुदत्त: (अ)

प्र. 57. पिककाकयो: भेद: कदा दृश्यते?
(अ) वसन्तसमये (ब) ग्रीष्मसमये
(स) शीतसमये (द) हेमन्तसमये (अ)

प्र. 58. प्राणेभ्योऽपि प्रिय: क:?
(अ) सुहृद: (ब) पुत्र:
(स) पुत्री (द) पिता (अ)

अधोलिखित वाक्येषु रेखांकित पदानां प्रसंगानुकूलम् उचितार्थं चित्वा लिखत

प्र. 1. कुत्सित वस्तुमिश्रितं <u>भक्ष्यम्</u>।
(अ) अखाद्यम् (ब) खाद्य पदार्थ
(स) पेयम् (द) जलम् (ब)

प्र. 2. <u>उदीरित:</u> अर्थ: पशुनापि गृह्यते।
(अ) कथित: (ब) अज्ञात:
(स) लिखित: (द) पठित: (अ)

प्र. 3. एकान्ते <u>कान्तारे</u> क्षणमपि सञ्चरणं स्यात्।
(अ) वने (ब) जने
(स) गहने (द) नगरे (अ)

प्र. 4. <u>विशीर्णा:</u> गृहसोपानमार्गा:।
(अ) विलुप्ता: (ब) नष्टा:
(स) विभाजिता: (द) विराजिता: (ब)

प्र. 5. <u>अम्भोदा:</u> बहवो हि सन्ति गगने।
(अ) वृक्षा: (ब) मेघा:
(स) पर्वता: (द) हंसा (ब)

प्र. 6. स: बसयानं <u>विहाय</u> पदातिरेव प्राचलत्।
(अ) गृहीत्वा (ब) उपविश्य
(स) त्यक्त्वा (द) निर्गत्य (स)

प्र. 7. अकस्मादेव गुर्जर-राज्यं <u>विपर्यस्तं</u> जातम्।
(अ) अस्तव्यस्तम् (ब) व्याकुलम्
(स) भयानकम् (द) भग्नम् (अ)

प्र. 8. <u>उत्खाता:</u> विद्युद्दीपस्तम्भा:।
(अ) उदण्डा: (ब) अवनता
(स) उत्पाटिता: (द) उपरिआगता (स)

प्र. 9. मालाकार: भवता <u>निदाघे</u> तरो: पुष्टि: कृता।
(अ) शरद्काले (ब) वर्षाकाले
(स) वसन्तकाले (द) ग्रीष्मकाले (द)

प्र. 10. कर्णो <u>पिधाय</u> शान्तं पापम्।
(अ) आच्छाध (ब) पीत्वा

Created by Universal Document Converter

(स) दत्वा (द) दृष्ट्वा (अ)

प्र. 11. वयसः तु न किञ्चिदन्तरम्।
(अ) वायसः (ब) वयस्य
(स) सौन्दर्यस्य (द) आयुषः (द)

प्र. 12. व्रजति हिमकरोऽपि बालभावात्।
(अ) चन्द्रः (ब) सूर्यः
(स) हिमालयः (द) गजेन्द्रः (अ)

प्र. 13. वानराः वारं वारं सिंह तुदन्ति।
(अ) अवसादयन्ति (ब)पश्यन्ति
(स) हसन्ति (द) वदन्ति (अ)

प्र. 14. स कृतान्तो न संशय।
(अ) कातरः (ब) कुशलः
(स) कठोरः (द) यमराजः (द)

प्र. 15. मनः शोषयत् तनुः पेषयद।
(अ) पुष्पम् (ब) शरीरम्
(स) जलम् (द) कपोलम् (ब)

प्र. 16. दुदान्तैः दशनैः अमुना स्यान्नैव जनग्रसनम्।
(अ) दशाननैः (ब) दुर्जनैः
(स) दासैः (द) दन्तैः (द)

प्र. 17. दुर्बलः वृषः जवेन गन्तुमशक्तः आसीत्।
(अ) तीव्रगत्या (ब) भारेण
(स) शनैः शनैः (द) मन्दं-मन्दं (क)

प्र. 18. सः क्षेत्रे पपात।
(अ) अचरत् (ब) अपिबत्
(स) अपतत् (द) अगच्छत् (स)

प्र. 19. अखण्डिता मे वणिज्या।
(अ) बाधायुक्ता (ब) निर्बाधा
(स) मन्दा (द) खण्डनसहिता (ब)

प्र. 20. आर्य! अलीकम् एतत्।
(अ) सत्यम् (ब) उचितम्
(स) सुन्दरम् (द) असत्यम् (द)

प्र. 21. बृहत्यः पाषाणशिलाः त्रुटयन्ति।
(अ) बहुधाः (ब) लघुतमाः
(स) पृथ्वीतलम् (द) भवनम् (द)

प्र. 22. यः इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च।
(अ) बहूनि (ब) प्रभावपूर्णानि
(स) पञ्चभूतानि (द) प्रतापानि (अ)

प्र. 23. स केनापि प्रकारेण परैर्न परिभूयते।
(अ) पराजयते (ब) पुरस्क्रीयते
(स) अवमान्यते (द) विजयते (स)

प्र. 24. निर्धनः जनः भूरि परिश्रम्य वित्तमुपार्जितवान्।
(अ) अल्पम् (ब) बहुधा
(स) पर्याप्तम् (द) न्यूनतम् (स)

प्र. 25. व बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।
(अ) गृहीत्वा (ब) उपविश्य
(स) त्यक्त्वा (द) निर्गत्य (स)

प्र. 26. अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्।
(अ) सत्यम् (ब) असत्यम्
(स) मधुरम् (द) अनर्गलम् (ब)

प्र. 27. उदये सविता रक्तः।
(अ) सागरः (ब) चन्द्रः
(स) सूर्यः (द) सायम् (स)

प्र. 28. अपत्येषु च सर्वेषु।
(अ) सन्ततिषु (ब) पर्वतेषु
(स) पुण्येषु (द) अन्येषु (अ)

प्र. 29. निरनुक्रोशः इति क एवं भणति?
(अ) सहृदयः (ब) निर्लज्जः
(स) निर्दयः (द) निर्जनम् (स)

प्र. 30. व्यायामिनम् अरयः न अर्दयन्ति।
(अ) मित्राणि (ब) बलिनः
(स) रोगाः (द) शत्रवः (द)

Created by Universal Document Converter

संस्कृत माध्यमेन प्रश्न-उत्तराणि

प्र. 1. शतशकटीयानं किं मुञ्चति?
उत्तरम् - कज्जलमलिनम् धूमम्।

प्र. 2. अद्य धरातलं कीदृशं जातम्?
उत्तरम् - समलम्।

प्र. 3. 'शुचिपर्यावरम्' इति पाठस्य लेखकः कः?
उत्तरम् - कविः हरिदत्तशर्मा।

प्र. 4. राजपुत्रस्य भार्या किन्नाम् आसीत?
उत्तरम् - बुद्धिमती।

प्र. 5. भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कः हसति?
उत्तरम् - धूर्तः श्रृगालः।

प्र. 6. लोके महतो भयात् कः मुच्यते?
उत्तरम् - बुद्धिमान।

प्र. 7. शरीरायासजननं कर्म किम् कथ्यते?
उत्तरम् - व्यायामः।

प्र. 8. शत्रवः कीदृशं मनुष्यं न अर्दयन्ति?
उत्तरम् - व्यायामिनम्।

प्र. 9. सर्पाः कम् न उपसर्पन्ति?
उत्तरम् - वैनतेयम् (गरुडम्)।

प्र. 10. रामस्य कृते कयोः स्पर्शः हृदयग्राही आसीत्?
उत्तरम् - लवकुशयोः।

प्र. 11. रामः लवकुशौ कुत्र उपवेशयति?
उत्तरम् - अङ्कम्।

प्र. 12. लवकुशौ कीदृशौ भ्रातरौ आस्ताम्?
उत्तरम् - सौदर्यो।

प्र. 13. लवकुशयोः गुरोः किन्नाम् आसती?
उत्तरम् - भगवान् वाल्मीकिः।

प्र. 14. सर्वधेनूनां माता का?
उत्तरम् - सुरभिः।

प्र. 15. सुरभिवचनं श्रुत्वा कस्य हृदयम् अद्रवत् ?
उत्तरम् - इन्द्रस्य।

प्र. 16. परेङ्गितज्ञानफलाः के भवन्तिः?
उत्तरम् - क्रोधः।

प्र. 17. नराणां देहस्थितो प्रथमो शत्रुः कः?
उत्तरम् - क्रोधः।

प्र. 18. भारस्य वहने कः वीरः?
उत्तरम् - खरः।

प्र. 19. पुरूषः कीदृशः नास्तिः?
उत्तरम् - अयोग्यः।

प्र. 20. कीदृशः महावृक्षः सेवितव्यः?
उत्तरम् - फलच्छायासमन्वितः।

प्र. 21. कस्य मांस स्थिरीभवति?
उत्तरम् - व्यायामाभिरतस्य मांसं स्थिरीभवति।

प्र. 22. व्यायामः सदा केषां पथ्यः कथ्यते?
उत्तरम् - व्यायामः सदा बलिनां स्निग्धभोजिनां च पथ्यः कथ्यते।

प्र. 23. सर्पाः कम् न उपसर्पन्ति?
उत्तरम् - वैनतेयम (गरुडम्)।

प्र. 24. शत्रवः कीदृशं मनुष्यं न अर्दयन्तिं?
उत्तरम् - व्यायामिनम्।

प्र. 25. शरीरायासजननं कर्म किम् कथ्यते?
उत्तरम् - व्यायामः।

प्र. 26. कविः किमर्थं प्रकृतेः शरणम् इच्छति?
उत्तरम् - अत्र महानगरे जीवितं दुर्वह जातम् अतः कविः प्रकृतेः शरणम् इच्छति।

प्र. 27. अस्माकं पर्यावरणे किं किं दूषितम् अस्ति?
उत्तरम् - अस्माकं पर्यावरणे वायुमण्डलम्, जलम्, भक्ष्यम्, सम्पूणेञ्च धरातलं दूषितम् अस्ति।

प्र. 28. कविः ग्रामान्ते किं द्रष्टुम् इच्छति?
उत्तरम् - कविः ग्रामान्ते निर्झर-नदी-पयः पुरं द्रष्टुम् इच्छति।

प्र. 29. बुद्धिमती केन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता?
उत्तरम् - पुत्रद्धयोपेता।

प्र. 30. व्याघ्रः किं विचार्य पलायितः?
उत्तरम् - व्याघ्रमारी काचिदियमिति विचार्य व्याघ्रः पलायितः।

प्र. 31. कियता बलेन व्यायामः कर्तव्यः?
उत्तरम् - अर्धबलेन।

Created by Universal Document Converter

प्र. 32. कस्य विरुद्धमपि भोजनं परिपच्यते?

उत्तरम् – व्यायामं कुर्वतो नित्यं यः।

प्र.33. कीदृशं कर्म व्यायामसंज्ञितम् कथ्यते?

उत्तरम् – शरीरायासजननं कर्म।

प्र. 34. सामाय कुशलवयोः कण्ठाश्लेषस्य स्पर्शः कीदृशः आसीत?

उत्तरम् – हृदयग्राही।

प्र. 35. बालभावत् हिमकरः कुत्र विराजते?

उत्तरम् – भगवतः शिवस्य मस्तके।

प्र. 36. कुशलवयोः मातरं वाल्मीकि केन नाम्ना आह्वयति?

उत्तरम् – वधूरिति।

प्र. 37. रामस्य प्रवासः कीदृशः आसीत्?

उत्तरम् – अतिदीर्घः दारुणश्च आसीत्।

प्र. 38. तपोवनवासिनः सीतां केन नाम्ना आह्मायन्तिस्म?

उत्तरम् – देवीति।

प्र. 39. कृषकः किं करोति स्म?

उत्तरम् – बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षण करोति स्म।

प्र. 40. सुरभिः इन्द्रस्य प्रश्नस्य किमुतरं दहाति?

उत्तरम् – सुरभिः कथ्यति यत् ''पुत्रस्य दैन्यं दृष्टवां अहं रोदिमि।

प्र. 41. जननी कीदृशी भवति?

उत्तरम् – जननी सर्वेष्वपत्येषु तुल्यवत्सला भवति।

प्र. 42. केन समः बन्धुः नास्ति?

उत्तरम् – उद्यमेन।

प्र. 43. वसन्तस्य गुणं कः जानाति?

उत्तरम् – पिकः।

प्र. 44. नराणाम् प्रथमः शत्रुः कः?

उत्तरम् – क्रोधः।

प्र.45. काकचेष्टः विद्यार्थी कीदृशः छात्रः मन्यते?

उत्तरम् – काकचेष्टः विद्यार्थी आदर्शः छात्रः मन्यते।

प्र. 46. तिरु शब्दस्य कस्यं वाचकः अस्ति?

उत्तरम् – तिरुशहदः श्रीवाचकः अस्ति।

प्र. 47. चन्दनदासः कस्य ग्रहजनं स्वगृहे रक्षति स्म।

उत्तरम् – चन्दनदासः अमात्यराक्षसस्य ग्रहजनं स्वगृहे रक्षति स्म।

प्र. 48. पृथिव्याः स्खलनात् कि जायते।

उत्तरम् – पृथिव्याः स्सलनात् भूकम्पनं तेन च महाविनाशं जायते।?

प्र. 49. तृणानां केन सह विरोधः अस्तिः?

उत्तरम् – तृणानां अग्निना सह विरोधः अस्ति।

प्र. 50. कानिपूरयित्वा जलदः रिक्तः भवित?

उत्तरम् – नानानदीनदशतानि पूरयित्वा जलदः रिक्त भवति।

प्र. 51. निर्धनः जनः कथं वित्तम् उपर्जितवान्?

उत्तरम् – निर्धनः जनः भूरि परिश्रम्य वितम् उपर्जितवान्।

प्र. 52. निर्धनः जनः कथं वित्तम् उपर्जित्वान्?

उत्तरम् – निर्धनः जनः भूरि परिश्रम्य वितम् उपर्जितवान्।

प्र. 53. लोकेस्मिन के चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः?

उत्तरम् – लोकेस्मिन विद्वांसः स्व चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।

प्र. 54. समग्रो विश्वः के आतंकितः दृश्यते?

उत्तरम् – समग्रो विश्वः भूकम्पैः आतंकितः दृश्यते।

प्र. 55. कस्य प्रसादेन चन्दनदास्य वाणिज्या अखण्डिता?

उत्तरम् – चाणक्यस्य प्रसादेन चन्दनदासस्य वणिज्य अखण्डिता।

प्र. 56. प्रीतिलक्षणं कतिविद्यम्?

उत्तरम् – प्रीतिलक्षणं षड्विधम्।

प्र. 57. सर्व वृतमवतगत्य न्यायाधीशः कं दोष भाजनम् अमन्यत्?

उत्तरम् – सर्व वृत्तमवगत्य न्यायधीशः आरक्षिणं दोषभाजनम् अमन्यत्।

प्र. 58. कीदृशः मंत्री केनापि प्रकारेण शत्रुभिः न परिभूयते?

उत्तरम् – वाक्पटुः, धैर्यवान, सभायामपि अकातरश्च मंत्री के नापि प्रकारेण शत्रुभिः न परिभूयते।

प्र. 59. प्रकृतिसमक्षमधापि मानवः कीदृशः वर्तते?

उत्तरम् – प्रकृति समक्षमधापि मानवः वामनकल्पः एवं वर्तते?

प्र. 60. 'मुदाराक्षसम्' इति नाटकस्य रचयिता कः?

उत्तरम् – 'मुदाराक्षस्म' इति नाटकस्य रचयिता महाकवि विशाखदतः।

प्र. 61. भीताः पूर्वराजपुरुषाः कुत्र व्रजन्ति?

उत्तरम् – भीताः पूर्वराजपुरुषाः देशातरं व्रजन्ति।

प्र. 62. चातकः कम् एवं याचते?

उत्तरम् – चातकः पुरन्दरम् एवं यायते।

प्र. 63. राजानः केभ्यः प्रतिप्रियम् इच्छन्ति?

उत्तरम् – राजनः प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियम् इच्छन्ति?

❑❑❑❑❑❑

Created by Universal Document Converter

प्रश्न-निर्माणम्

प्र. 1. सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते?

उत्तरम् - कस्याः।

प्र. 2. जगति बहुशुद्धीकरणं करणीयम्?

उत्तरम् - किम्।

प्र. 3. महानगरमध्ये अनिशं कालायसचक्रं प्रचलति?

उत्तरम् - कुत्र।

प्र. 4. व्याघ्रं दृष्ट्वा धूर्तः शृगालः अवदत्?

उत्तरम् - कम्।

प्र. 5. राजसिंहस्य भार्या बुद्धिमती आसीत्?

उत्तरम् - का।

प्र. 6. मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श?

उत्तरम् - कम्

प्र. 7. अरयः व्यायामिनं न अर्दयन्ति?

उत्तरम् - के।

प्र. 8. आत्महितैषिभिः सर्वदा व्यायामः कर्तव्यः?

उत्तरम् - कैः।

प्र. 9. शरीरे कान्तिः व्यायामेन संभवति?

उत्तरम् - केन।

प्र. 10. परमम् आरोग्यं व्यायामाद उपजायते?

उत्तरम् - कस्माद्।

प्र. 11. सिंहासनस्थः रामः प्रविशति?

उत्तरम् - कः।

प्र. 12. धेनूनाम् माता सुरभिः आसीत्?

उत्तरम् - केषाम्।

प्र. 13. मृगाः मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति?

उत्तरम् - कैः।

प्र. 14. वसन्तस्य गुणं पिकः वेत्ति न वायसः?

उत्तरम् - कस्य।

प्र. 15. आलस्यं मनुष्याणां महान् रिपुः?

उत्तरम् - किम्।

प्र. 16. सर्वेप्रकृतिमातरं प्रणमन्ति?

उत्तरम् - का

प्र. 17. तत्वार्थस्य निर्णयः विवेकन कर्तुं शक्यः?

उत्तरम् - कस्य

प्र. 18. सः प्रभूतानि सुखानि इच्छति?

उत्तरम् - कानि

प्र. 19. शिविना विना इदं दुष्करं कार्यं कः कुर्यात्?

उत्तरम् - केन

प्र. 20. तृणानाम् अग्निना सह विरोधः न भवति?

उत्तरम् - केषाम्

प्र. 21. चातकः वने वसति?

उत्तरम् - कुत्र

प्र. 22. पतङ्गः अम्बरपथम् आपेदिरे?

उत्तरम् - के

प्र. 23. मालाकारः निदाघे अल्पजलेनैव वृक्षान् सिञ्चति।?

उत्तरम् - कदा

प्र. 24. मयूरस्य नृत्यं प्रकृतेः अराधना?

उत्तरम् - कस्या

प्र. 25. करुणापरो ग्रही तस्मै आश्रायं प्राच्छत्?

उत्तरम् - कस्मै

प्र. 26. सः भारवेदनया क्रदति स्म?

उत्तरम् - कया

प्र. 27. उद्याने पक्षिणां कलरवम् चेतः प्रसादयित?

उत्तरम् - केषाम्

प्र. 28. व्याघ्रचित्रकौ नदीजलं पातुमागतौ?

उत्तरम् - कौ

प्र. 29. बकः रक्षोपायान् क्रियान्वितान् कारयिष्यति?

उत्तरम् - कान्

प्र. 30. स बसयानेन विहाय पदातिरेव प्राचलत्?

उत्तरम् - कथम्

❑❑❑❑❑❑

Created by Universal Document Converter

गद्यांशस्य हिन्दीभाषाया सप्रंसगम् अनुवादं

अद्योलिखितस्य पठितगद्यांशस्य हिन्दीभाषाया सप्रंसगम् अनुवादं लिखत-

प्र. 1. बहुन्यपत्यानि में सन्तीति सत्यम्। तथाप्यहमेतस्मिन् पुत्रे विशिष्य आत्मवेदनामनु भवामि। यतो हि अयमन्येभ्यो दुर्बलः। सर्वेष्वपत्येषु जननी तुल्यवत्सला एवं। तथापि दुर्बले सुते मातुः अभ्यधिका कृपा सहजैव इति। सुरभिवचनं श्रुत्वा भृशं विस्मितस्याखण्डलस्यापि हृदयमद्रवत।

प्रंसग- प्रस्तुत गंद्याश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेभुषी-द्वितीयो भागः' के 'जननी तुल्यवत्सला' शीर्षक पाठ से उद्धत है। मूलतः इस पाठ में वर्णित कथा महर्षि वेदव्यास विरचित ऐतिहासिक ग्रन्थ 'महाभारत' के 'वन पर्व' से ली गई है।

हिन्दी-अनुवाद-

''मेरे बहुत सन्तान है, यह सत्य है। फिर भी मैं इस पुत्र में विशेषकर कष्ट का अनुभव कर रही हूँ। क्योंकि यह अन्य पुत्रों से दुर्बल है। सभी सन्तानों में माता समान रूप से स्नेह करने वाली ही होती है। फिर भी दुर्बल पुत्र में माता की कुछ अधिक कृपा स्वभाव से ही होती है।'' सुरभि के वचन को सुनकर अत्यधिक आश्चर्यचकित इन्द्र का हृदय भी द्रवित हो गया।

प्र. 2. भूमौ पतिते स्वपुत्रं दृष्टवा सर्वधेनूनां मातुः सुरभेः नेत्राभ्याम्श्रूणि आविरासन्। सुरभेरिमामवस्थां दृष्ट्वा सुराधिपः तामपृच्छत् ''उनयि शुभे। किमेव रोदिषि? उच्चताम्'' इति

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी, द्वितीयो भागः' के जननी तुल्यवत्सला शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः इस पाठ में वर्णित कथा महिर्ष वेदव्यास विरचित ऐतिहासिक ग्रन्थ 'महाभारत' के 'वन पर्व' से ली गई है।

हिन्दी अनुवादः

भूमि पर गिरे हुए अपने पुत्र को देखकर सभी गायों की माता सुरभि की दोनों आंखों से आंसू आने लगे। सुरभि की इस दशा को देखकर इन्द्र ने उससे पूछा-''हे शुभे। क्यों इस प्रकार रो रही हो?''

3. भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कश्चित् धूर्तः श्रृगाल हसन्नाह ''भवान कुतः भयात् पलायितः?''

व्याघ्रः गच्छ,गच्छ जम्बुक। त्वमपि किञ्चिद् गूढप्रदेशम्। यतो व्याघ्रमारिति या शास्त्रे श्रूयते तयाहं हन्तुमारस्थः परं ग्रहीतकरजीवितो नष्टः तदग्रतः।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्याश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भाग।' के 'बुद्धिर्बलवती सदा' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ 'शुकसप्तति।' नामक सुप्रसिद्ध कथाग्रन्थ से संकलित किया गया।

हिन्दी-अनुवाद-

भय से व्याकुल बाघ को देखकर कोई धूर्त सियार हँसता हुआ बोला आप किस भय से भाग रहो हो?

बाघ-जाओ, सियार। तुम भी किसी गुप्त प्रदेश में चले जाओ। क्योंकि 'बाघ को मारने वाली स्त्री' ऐसा जो शास्त्र में सुना जाता है वह मुझे मारने ही वाली थी किन्तु प्राण हथेली पर रखकर उसके सामने से मैं शीघ्र भाग आया हूँ।

4. अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। एकदा केनापि आवश्यकार्येण तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। मार्गे गहनकानने सा एक व्याघ्रं ददर्श।

प्रसंग- प्रस्तुत गंद्याश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः।' के 'बुद्धिर्बलवती सदा' शीर्षक पाठ से उद्धत किया गया है। मूलतः इस पाठ में वर्णित कथा 'शुकसप्ततिः' नामक कथाग्रन्थ से संकलित है।

हिन्दी-अनुवाद

देउल नामक एक गांव था। वहां राजसिंह नामक राजकुमार रहता था, एक बार किसी आवश्यक कार्य से उसकी पत्नी बुद्धिमती अपने दोनों पुत्रों के साथ पिता के घर (पीहर) की ओर जा रही थी। रास्ते में गहन जंगल में उसने एक शेर को देखा।

प्र. 5. विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्रो तस्मिन् गृहे कश्चन चौरः गहाभ्यन्तरं प्रविष्टः। तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायितः चौरस्य पाद ध्वनिनां प्रबुद्धोऽतिथि चौरशङ्कया तमन्वधाषत् अगृहणाच्च, पर विचित्रमघटत।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीय भागः के विचित्रसाक्षी शीर्षक पाठ से उद्धृत है। यह ओमप्रकाश ठाक्कुर द्वारा रचित कथा का सम्पादित अंश है उस विद्वान न्यायाधीश द्वारा एक विचित्र युक्ति से सफलतापूर्वक न्याय किये जाने का वर्णन है।'

अनुवादन भाग्य की लीला विचित्र है। उसी रात को उस घर में कोई चोर अन्दर घुस गया। वह वहां पर रखी हुई एक पेटिका को

Created by Universal Document Converter

लेकर चला गया। चोर के पैरों की आवाज से जगा अतिथि चोर की शंका करता हुआ उसके पीछे-पीछे भागा और उसे पकड़ लिया, किन्तु वहां विचित्र घटना घटित हुई।

6. **आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्। तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादितं देह स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थिता। आरक्षी सुस्पष्ट देह आसीत्, अभियुक्तश्च अतीव कृशकायः।**

प्रसंग **गद्यांश संख्या 1 का प्रसंग देखे।**

अनुवाद आदेशपाकर दोनों चल दिये। वहां पास जाकर लकड़ी के तख्ते पर रखे हुए कपड़े से ढके हुए शरीर को अपने कन्धे पर उठाते हुए उन दोनों ने न्यायालय की ओर प्रस्थान किया रक्षक पुरुष मजबूत शरीरवाला था और अभियुक्त अत्यधिक कमजोर शरीर वाला।

7. **इयामासीत् भैरवविभीषिका कच्छभूकम्प्स्य। पञ्चोत्तर द्विसहस्त्र खीष्टाबदे (2005 ईस्वीये वर्षे) अति कश्मीर प्रान्ते पाकिस्तान देशे च धरायाः महत्कम्पनं जातम्। यस्मातकारणात् लक्ष्यरिमिताः जना अकालकवलिता।**

प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भाग:' के 'भूकम्पविभषिका' शीर्षक पाठ से उद्धृत है इससे भूकम्प की भयानकता व विनाश का तथा उसके कारणों का वर्णन किया गया है।

उत्तरम् - यह तो कच्छ भूकम्प की भीषण विभीषिका थी। सन् 2005 ई. वर्ष में भी कश्मीर प्रान्त में और पाकिस्तान देश में भूमि का महान कम्पन हुआ था। जिस कारण लाखों की संख्या में लोग असमय ही मृत्यु को प्राप्त हुए थे।

प्र. 8. **ज्वाला मुख-पर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते इतिकथयन्ति भूकम्प विशेषज्ञाः। पृथिव्याः गर्भे विद्यमानोऽग्निर्यद खनिजमृत्तिका-शिलादिसञ्चयं क्वथयति तदा तत्सर्वमेव लावारसताम् अपेत्य दुर्वारगत्या धरां पर्वते वा विदार्म बहिर्निष्क्रामति।**

प्रसंग- गद्यांश संख्या 3 का प्रसंग देखे।

अनुवाद ज्वालामुखी पर्वतों के विस्फोटों से भी भूकम्प उत्पन्न होता है। ऐसा भूकम्प के रहस्य को जानने वाले वैज्ञानिक कहते है। पृथ्वी के गर्म में विद्यमान अग्नि जब खनिज पदार्थो में मिट्‌टी शिला आदि समूह को उबालती है तब वह सब कुछ ही लावारस के रूप को प्राप्त कर न रोके जा सकने वाली तीव्र गति से पृथ्वी अथवा पर्वत को फाड़कर बाहर निकलती है।

9. **यद्यपि दैवः प्रकोपो भूकम्पो नाम, तस्योपशमनस्य न कोऽपि स्थिरोपायो दृश्यते। प्रकृति समक्षमद्यापि विज्ञानगर्वितो मानवः वामकल्प एवं तथापि भूकम्परहस्यज्ञाः कथयन्ति यत् बहुभूमिक भवन निर्माणं न करणीयम्।**

प्रसंग- **गद्यांश संख्या 3 का प्रसंग देखें।**

अनुवाद यद्यपि भूकम्प ईश्वरीय प्रकोप है, उसे शान्त करने का कोई भी स्थिर उपाय दिखाई नहीं देता है। प्रकृति के सामने विज्ञान से गर्वयुक्त मानव आज भी बौना ही है, फिर भी भूकम्प के रहस्य को जानने वाले वैज्ञानिक कहते हैं कि बहुमंजिलो वाले भवनों का निर्माण नहीं करना चाहिए।

10. **विचित्र साक्षी कथा का सारांश हिन्दी भाषा में लिखिए।**

उत्तरम् - एक निर्धन व्यक्ति अपने पुत्र से मिलने धनाभावके कारण पैदल ही चल दिया। रात के समय वह पास ही स्थित गांव में किसी के घर शरण लेकर रूक गया। दुर्भाग्य से उसी रात कोई चोर घर में घुस गया और एक संन्दूक लेकर जाने लगा। उसके पैरों की आवाज से जागे हुए उस अतिथि ने उसे पकड़ लिया किन्तु वह चोर ही जोर-जोर से चिल्लाने लगा कि "यह चोर है। यह चोर है।" उसकी आवाज सुनकर सभी वहां आ गए उसे चोर मानकर जेल में डाल दिया।

अगले दिन न्यायालय में उन दोनों से न्यायाधीश ने सम्पूर्ण विवरण सुना न्यायाधीश ने उनकी सारी बाते सुनकर समझ लिया कि अतिथि निर्दोष है किन्तु कोई प्रमाण नहीं था। अत: उसने एक विचित्र युक्ति का सहारा लिया उन दोनों को बाहर सड़क पर पड़े शव को लेकर आने का आदेश दिया। शव लाते समय शव के भार से वह अतिथि बहुत पीड़ित होकर दुखी हुआ। तब आरक्षित ने कहा "तुमने मुझे चोरी करने से रोका था। अब भुगतो। न्यायालय पहुंचने पर पुनः उनसे उस घटना को पूछा। जब आरक्षी अपना पक्ष रखने लगा तो शव ने खड़े होकर न्यायाधीश से मार्ग का वृत्तान्त सुनाया। तत्पश्चात् आरक्षी को कारावास और अतिथि को सम्मानपूर्वक मुक्त किया गया।

❑❑❑❑❑❑

Created by Universal Document Converter

पद्यांशस्य हिन्दीभाषाया सप्रंसगम् अनुवादं

1. **निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति,**
ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति।
अकारणद्वेषि मनस्तु यस्य वै,
कथं जनस्तं परितोषयिष्यति।।

प्रसंग- प्रस्तुत पंद्याश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः के 'सुभाषितानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। इस पद्याश में बिना कारण के क्रोध के दुष्प्रभाव का वर्णन करते हुए कहा गया है कि-

हिन्दी अनुवाद- जो किसी कारण को उद्देश्य में करके अत्यधिक क्रोध करता है वह उस कारण के समाप्त हो जाने पर निश्चित रूप से प्रसन्न होता है। किन्तु जिसका मन बिना कारण ही द्वेष करने वाला है उस मन को व्यक्ति कैसे संतुष्ट करेगा, अर्थात् ऐसे मन को कभी भी सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता हैं।

2. **क्रोधो हि शत्रुः प्रथमो नराणां,**
देहस्थितो देहविनाशनाय,
यथास्थितः काष्ठगतो वह्निः,
स एवं वह्निर्दहते शरीरम्।।

प्रसंग- प्रस्तुत पंद्याश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भाग' के 'सुभाषितानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। इस पद्यांश में क्रोध को विनाशशील शत्रु बतलाते हुए कहा गया है कि-

हिन्दी अनुवाद-मनुष्यों के शरीर का विनाश करने के लिए पहला शत्रु शरीर में ही स्थित क्रोध है। जिस प्रकार काष्ठ के अन्दर स्थित अग्नि काष्ठ को ही जला देती है। उसी प्रकार शरीर में स्थित क्रोध शरीर को ही जला देता है। इसलिए हमें क्रोध का त्याग करना चाहिए।

3. **मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति**
गावश्च गोभिः तुरगास्तुङ्गैः।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः,
समान-शील-व्यसनेषु सख्यम्।।

प्रसंग- प्रस्तुत पंद्याश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः' के 'सुभाषितानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। इस पद्यांश में अनेक उदाहरणों के द्वारा प्रतिपादित किया गया है कि मित्रता समान चरित्र व स्वभाव वालों में ही होती है।

हिन्दी अनुवाद- मृग मृगों के साथ, गाये गायों के साथ, घोड़े घोड़ों के साथ, मूर्ख मूर्खों के साथ और विद्वान विद्वानों के साथ ही पीछे-पीछे जाते है। मित्रता समान चरित्र व स्वभाव वालों में ही होती है।

4. **वायुमण्डलं भृशं दूषितं न हि निर्मलं जलम्।**
कुत्सितवस्तुमिश्रितं भक्ष्यं समलं धरातलम।।
करणीयं बहिरन्तर्जगति तु बहु शुद्धीकरणम्।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः' के 'शुचिपर्यावरणम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ कवि हरिदत्त शर्मा द्वारा रचित 'लसल्लतिका' रचना-संग्रह से संकलित है। इस अंश में संसार में अत्यधिक प्रदूषण से सम्पूर्ण वायुमण्डल, जल एवं खाद्य पदार्थ प्रदूषित हो जाने का वर्णन करते हुए कहा गया है कि-

हिन्दी अनुवाद-(प्रदूषण के कारण) वायुमण्डल अत्यधिक दूषित हो गया है। क्योंकि जल भी निर्मल नहीं है। खाद्य पदार्थ प्रदूषित वस्तुओं से मिश्रित हैं। सम्पूर्ण भूमि गन्दगी से युक्त है। अतः संसार में अन्दर और बाहर से अत्यधिक शुद्धीकरण करना चाहिए। पर्यावरण की शुद्धता बनी रहे।

5. **दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम्।**
शुचि-पर्यावरणम्।।
महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम।
मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम्।।
दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम्।।

प्रसंग- प्रस्तुत पंद्याश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः।' के 'शूचिपर्यावरणम्' नामक पाठ से लिया गया है। मूलतः यह पाठ कवि हरिदत्त शर्मा द्वारा रचित काव्य 'लसल्लतिका' से संकलित है।

हिन्दी अनुवाद-इस संसर में जीवन अत्यधिक कठिन (दूभर) हो गया है। अतः प्रकृति की ही शरण में जाना चाहिए, पर्यावरण शुद्ध बना रहे, महानगरों के मध्य में प्रदूषणरुपी लोहचक्र दिन-रात चलता हुआ, मन को सुखाता हुआ और शरीर को पीसता हुआ सदा टेढा चलता है। इसके भयानक दातों से मानव-विनाश नहीं होना चाहिए। अतः पर्यावरण शुद्ध होना चाहिए।

6. **कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति शतशकटीयानम्।**
वाष्पयानमाला सन्धावती वितरन्ती ध्वानम्।।
यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः, कठिनं संसरणम्।

Created by Universal Document Converter

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः। के 'शुचिपर्यावरणम्' नामक पाठ से उद्धृत किया गया है। मूलतः यह पाठ कवि हरिदत्त शर्मा द्वारा विरचित काव्य। लसल्लतिका से संकलित है।

हिन्दी अनुवाद-

(महानगरों में) सैंकडो मोटरगाड़ियाँ काजल के समान मलिन (काला) धुआं छोड़ती रहती हैं, रेलगाड़ियों की पंक्ति कोलाहल करती हुई दौड़ती है। क्योंकि वाहनों की अनन्त पंक्तियाँ है, इसलिए चलना भी कठिन हो गया है। अतः पर्यावरण शुद्ध रहना चाहिए।

7. **वयोबलशरीराणि देशकालाशनानिश,**
समीक्ष्य कुर्याद् व्यायाममन्यथा रोगमाप्नुयात्।।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः।' के 'व्यायामः सर्वदा पथ्यः' शीर्षक पाठ से लिया गया है। मूलतः यह पाठ आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुतसंहिता' से संकलित है।

अनुवाद-उम्र, बल, शरीर, देश, काल और भोजन का विचार करके अर्थात् देखकर ही व्यायाम करना चाहिए अन्यथा रोग प्राप्त करे अर्थात् इनको देखे बिना यदि व्यायाम किया जाता है तो वह हानिकारक होता है।

8. **व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम्।**
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते।।

प्रसंग- प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः के' व्यायामः सर्वदा पथ्यः शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। मूलतः यह पाठ आयुर्वेद के प्रसद्धि ग्रन्थ 'सुश्रुतसंहिता' से संकलित है।

अनुवाद-रोजना व्यायाम करने वाले व्यक्ति को भली प्रकार पका हुआ अथवा नहीं पका हुआ और आवश्यकता से अधिक भोजन भी बिना किसी दोष के पच जाता है।

9. **व्यायामों हि सदा पथ्या बलिनां स्निग्धभोजिनाम्।**
स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः।।

प्रसंग- प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक शेमुषी-द्वितीयो भागः। के 'व्यायामः सर्वदा पथ्यः' शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है।

हिन्दी अनुवाद-व्यायाम बलशाली और मधुर भोजन करने वालों के लिए निश्चय ही हमेशा लाभदायक होता है। और वह (व्यायाम) सर्दी में और वसन्त में उनके लिए लाभदायक माना गया है।

10. **शरीरायसजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम्।**
तत्कृत्वा तु सुखं देहं विमृद्नीयात समन्ततः।।

प्रसंग- प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः' के व्यायामः सर्वदा पथ्यः। शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। मूलतः यह पाठ आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ सुश्रुतसंहिता से संकलित है।

हिन्दी अनुवाद -शारीरिक परिश्रम से उत्पन्न (थकावट पैदा करने वाला) कार्य व्यायाम नाम से जाना जाता हैं। अर्थात् उसे व्यायाम कहते है। उसे (व्यायाम को) करके सुखपूर्वक (सहज रुप से) शरीर की पूरी तरह से (शरीर के सभी अंगों की) मालिश करनी चाहिए।

11. **अवक्रता मया चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि।**
तदेबाहु महात्मानः समत्वमिति तथ्यतः।।

प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः' के सूक्तयः शीषर्क पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ तिरुवल्लुवर द्वारा तमिलभाषा में रचित 'तिरुककुल' नामक ग्रन्थ से लिया गया है।उसमें मानवजाति के लिए जीवनोपयोगी सत्य का सार एवं बोधगम्य पद्यों के द्वारा प्रतिपादन किया गया है।

अनुवाद-जिस प्रकार मन में सरलता होती है, उसी प्रकार यदि वाणी में सरलता हो तो वास्तव में उसे ही महान आत्मा का समत्व कहते है।

12. **विद्वांस एवं लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।**
अन्येषां वदने में तु ते चक्षुर्नामनी मते।।

प्रसंग उपरोक्त प्रसंग देखें।

इस संसार में विद्वानों की ही नेत्रों से युक्त कहा गया है। दूसरों के मुख पर जो नेत्र हैं, वे तो नाममात्र के ही माने गये है। अर्थात् बिना विद्वता के मूर्ख तो नेत्र होने पर भी अन्धे के समान है।

13. **वाक्पटुधैर्यवान् मंत्री सभायामप्यकातरः।**
सः केनापि प्रकारेण परैर्न परिभूयते।।

उत्तरम् **श्लोक संख्या 1 का प्रसंग देखें।**

जो मंत्री बोलने में चतुर, धैर्यवान तथा सभा में भी निर्भीक होता है, वह किसी भी प्रकार के शत्रुओं द्वारा अपमानित नहीं किया गया जाता है।

14. **आचारः प्रथमो धर्मः इत्येतद विदुषां वचः।**
तस्माद् रक्षेत् सदाचरां प्राणेभ्योऽपि विशेषतः।।

अनुवाद-'सदाचार पहला धर्म है' यह विद्वानों का वचन है। इसलिए विशेष रूप से प्राण देकर भी सदाचार की रक्षा करनी चाहिए।

15. **एकेन राजहंसने या शोभा सरसों भवेत्।**
न सा बकसहस्रेण परितस्तीर वासिना।।

प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'शेमुषी-द्विवीयो भागः'

Created by Universal Document Converter

के 'अन्योक्तय:' शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। इस पद्य में राजहंस के माध्यम से गुणवान व्यक्ति की प्रशंसा करता है।

अनुवाद-एक राजहंस के द्वारा तालाब की जो शोभा होती है, वह शोभा चारों ओर किनारे पर निवास करने वाले हजारों बगुलों से भी नहीं होती है। अर्थात् एक गुणवान् व्यक्ति से ही सम्पूर्ण कला सुशोभित हो जाता है, हजारों गुणहीनों से नहीं।

16. **एक एवं खगो मानी वने वसति चातकः।**

पिपसितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम्।।

प्रसंग प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो-भाग:' के 'अन्योक्तय:' शीर्षक पाठ से अवतरित है। इसमें चातक पक्षी के बारे में बताया गया है।

अनुवाद-एक चातक नाम का पक्षी जो वन में रहता है। वही स्वाभिमानी माना जाता है। वह या तो प्यासा ही मर जाता है अथवा केवल इन्द्र से ही याचना करता है।

17. **आश्वास्य पर्वतकुलं तपनोष्णतप्त-मुदामदाविधुराणिच काननानि।**

नानानदीनदशतानि च पूयमित्वा, रिक्तोऽसि यज्जलद। सैव तवोत्तमा

प्रसंग- प्रस्तुत पदा हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भाग:' के अन्योक्तय: शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। इसमें कवि मेघ के माध्यम से कवि ने दानशीलता के कारण निर्धन हुए व्यक्ति की प्रशंसा की है।

अनुवाद-सूर्य की गर्मी से तपे हुए पर्वतो के समूह को सन्तुष्ट करके और ऊँचे वृक्षों से रहित वनों को संतुष्ट करके तथा अनेक नदियों और सैकड़ों नदी को भरकर हे बादल! जो तुम रिक्त हो गये हो तुम्हारी वही उत्तम शोभा है।

18. **ए रे चातक! सावधान मनसा मित्त क्षण श्रूयतामम्भोदा बहवोहिस गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।**

प्रसंग- प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भाग:' के 'अन्योक्तय:' शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। इस वद्य में कवि ने चात पक्षी के माध्यम से हर किसी के सामने दीनतापूर्वक याचना नहीं करने की प्रेरणा दी है।

अनुवाद- कवि कहता है कि हे मित्र चातक। ध्यानपूर्वक क्षणभर के लिए सुनिए, आकाश में बहुत बादल है, वे सभी इसी प्रकार के (वर्षा करने वाले) नहीं है, कुछ तो पृथ्वी को वर्षा के जल से भिगो देते हैं और कुछ व्यर्थ ही गर्जना करते हैं। अत: तुम जिसे-जिसको देखते हो उस-उसके सामने दीनता युक्त वचन मत बोलो। अर्थात् हर किसी के सामने दीनतापूर्वक याचना नहीं करनी चाहिए।

❑❑❑❑❑❑

Created by Universal Document Converter

नाट्यांश हिन्दीभाषाया सप्रंसगम् अनुवादं

प्र. 1. अद्योलिखितस्य नाटयांश सप्रसङ्गं हिन्दी भाषाया अनुवादं लिखत-

कुशलवौ (रामस्य समीपम् उपसृत्य प्रणम्य च) अपि कुशलं महाराजस्य?

रामः- युष्मदर्शनाात् कुशलमिव। भवतोः किं वयमत्र कुशलप्रश्नस्य भाजनम् एवं, न पुनरतिथिजनसमुचितस्य कण्ठाश्लेषस्य (परिष्विज्य) अहो हृदयग्राही स्पर्शः।

(आसनार्धमुपवेशयति)

प्रसंग- प्रस्तुत नाट्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः।' के 'शिशुलालनम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। मूलतः यह पाठ संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार दिङ्नाग द्वारा विरचित नाटक 'कुन्दमाला' के पंचम अंक से संकलित है।

हिन्दी अनुवाद-

कुश और लव (राम के पास जाकर और प्रणाम करके) क्या महाराज कुशल है।

राम-तुमको देखने से कुशल जैसा ही हूँ। क्या आप दोनों के द्वारा मैं कुशलता पूछने का ही पात्र हूँ। अतिथिजन के योग्य गले लगाने का नहीं (आलिङ्गन करके) अहो। इनका स्पर्श तो हृदय को छूने वाला है।(आधे आसन पर बैठाते हैं।)

2. लव-तस्याः द्वे नामनी।

विदूषकः कथमिव?

लवः तपोवनवासिनो देवीति, भगवान् वाल्मीकिर्वधूरिति।

रामः अपि च इतस्तावद् वयस्य।

कुहूर्त्तमात्रम्।

विदूषकः (उपसृत्य) आज्ञापयतु भवान्।

रामः-अपि कुमारयोरनयोरस्माकं च सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृत्तान्तः

प्रसंग- प्रस्तुत नाट्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः' के 'शिशुलालनम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। मूलतः यह पाठ संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार दिड्नाग विरचित नाटक 'कुन्दमाला' के पंचम अंक से संकलित है।

हिन्दी अनुवाद-

लव- उनके दो नाम हैं।

विदूषक-किस प्रकार।

लव-तपोवन में रहने वाले 'देवी' इस नाम से बुलाते है और भगवान् वाल्मीकि 'वधू' इस नाम से।

राम- और भी, मित्र! क्षण भर के लिए इधर आओ।

विदूषक- (पास जाकर) आप आज्ञा दीजिए।

राम-क्या इन दोनों कुमारों का और हमारा पारिवारिक वृतान्त सभी तरह से समान ही है।

3. काकः अरे! अरे ! किं जल्पसि? यदि अहं कृष्ण वर्णः तर्हित्वं किं गौराङ्गः? अपि च विस्मर्यते किं यत् मम सत्यप्रियतातुजनानं कृते-उदाहरणस्वरूपा- अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्-इति प्रकारेण। अस्माकं परिश्रमः ऐक्यं च विश्वप्रथितम् अपि च काकचेष्टः विद्यार्थी एवं आदर्शच्छात्रः मन्यते।

पिंकः अलम् अलम् अतिविकत्थनेन। किं विस्मर्यते यत्-

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।

वसन्त समये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः।।

प्रसंग प्रस्तुत नाट्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः' के 'सौहार्द प्रकृतेः शोभा' शीर्षक पाठते उद्धृत है। इस पाठ में पशु-पक्षियों के रोचक दृष्टान्त द्वारा समाज में स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ बतलाने का तथा प्रकृति माता के माध्यम से सभी का यथासमय महत्व प्रतिपादित किया गया।

अनुवाद- कौआ-अरे! अरे! क्या बकवास कर रहे हो? यदि मैं काला हूँ तो क्या तुम गोरे हो? और भी क्या तुम भूल गए हो कि मेरी सत्यप्रियता तो लोगों के लिए उदहारण स्वरूप है-''यदि झूठ बोलोगे तो कौआ काटेगा''-इस प्रकार से। हमारा परिश्रम और एकता संसार में प्रसद्धि है। और भी कौए की चेष्टा वाला विद्यार्थी ही आदर्श छात्र माना जाता है।

कोयल बस आत्मप्रशंसा से रुको। क्या भूल रहे ही कि-कौआ काला होता है, कोयला भी काली होती है फिर कोयल और कौए में क्या भेद है? वसन्त का समय आने पर पता लगता है कि कौआ कौआ होता है और कोयल कोयल होती है।

4. काकःरे परभृत्! अहं यदि तव संतति न पालयामि तर्हि कुत्रस्यु पिकाः? अतः अहम् एवं करुणापरः पक्षिसम्राट् काकः।

गजः-समीपतः एवगच्छन् अरे! अरे ! सर्वा वार्ता श्रृण्वन्नेवाहम् अत्रागच्छम्। अहं विशालकायः, बलशाली,

Created by Universal Document Converter

पराक्रमी च। च सिंहः वा स्यात् अथवा अन्यः कोऽपि।

प्रसंग- नाट्यांश संख्या 1 का प्रसंग देखें।

कौआ- अरे कोयल! मैं यदि तुम्हारी सन्तान का पालन-पोषण नहीं करुंगा तो कोयल नहीं होगी। इसलिए मैं ही कौआ करुणा-परायण पक्षियों का राजा हूँ।

हाथी- पास से ही आता हुआ अरे! अरे! सारी बात सुनते हुए ही मैं यहां आया हूँ। मैं विशाल शरीर वाला, बलशाली और पराक्रमी हूँ। सिंह हो अथवा अन्य कोई भी।

5. **चाणक्यः- भोश्रेष्ठिन्! चन्द्रगुप्त राज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव अर्थ सम्बन्धः प्रीतिमुत्पाद्रयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवता परिक्लेश एव।**

चन्दनदासः-(सहर्षम्) आर्य! अनुग्रहीतोऽस्मि।

शाक्यः भो श्रेष्ठिन्।स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवति इति ननुभवता् प्रष्टव्याः स्मः।

चन्दनदासः आज्ञापयतु आर्यः।

चाणक्य- राजनि अविरुद्धवृतिर्भव।

चन्दनदासः- आर्य ! कः पुनरधन्यो राज्ञों विरुद्ध इति आर्येणा वगम्यते?

चाणक्य-भवानेव तावत् प्रथमम्।

चन्दनदासः (कणोपिघाय) शान्तं पापम्। कीदृशस्तृणानामग्निना सह विरोधः

चाणक्य - अयमीदृशो विरोधः यत्त्वमद्यपि राजपथ्यकारिणो डमात्य- राक्षमस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षासि।

चन्दनदासः आर्य। अलीकमेतत्। केनाप्यनार्येण आययि निवेदितम्।

प्रसंग- प्रस्तुतनाट्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी-द्वितीयो भागः' के 'प्राणिम्यो इतिप्रियः सुहद्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ महाकवि विशाखदत्त द्वारा रचित 'मुद्राराक्षसम्' नामक नाटक के प्रथम अंक से संकलित किया गया है। इसमें चन्दनदास के रूप में सुह्रद निष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत है।

अनुवाद-चाणक्य-हे सेठ! यह चन्द्रगुप्त का राज्य है, नन्द का राज्य नहीं है। नन्द के राज्य में ही घन का संबंध प्रसन्नता को उत्पन्न करता है। चन्द्रगुप्त की तो प्रसन्नता आपके सुख में ही है।

चन्दनदास-(प्रसन्नतापूर्वक) आर्य! मैं अनुगृहीत हूँ।

वाक्यः हे सेठ! और वह सुख किस प्रकार उत्पन्न होता है, ऐसा निश्चय ही आपके द्वारा हमसे पूछने योग्य है।

चन्दनदास- हे आर्य! आदेश दीजिए।

वाक्य- राजा के अनुकूल ही (विपरीत नहीं) व्यवहार करना चाहिए।

चन्दनदासः हे आर्य! ऐसा कौन अभागा है जो कि राजा के विपरीत आपकी दृष्टि में आया है।

चाणक्य-सर्वप्रथम तो आप ही है।

चन्दनदासः (कानों को बंद करके) पाप शान्त हो, पाप शान्त हो। तिनको का अग्नि के साथ विरोध कैसा?

चाणक्य-यह विरोध ऐसा है कि तुम अब भी राजा (चन्दगुप्त) का अहित करने वाले अमात्य राक्षस के परिवार की अपने घर में रक्षा कर रहे हो।

चन्दनदास-हे आर्य। यह झूठ है। किसी दुष्ट के द्वारा आपसे कह दिया गया है।

6. **चन्दनदासः आर्य! तस्मिन् समये आसीदस्मदगृहे अमात्यरादास गृहजन इति।**

चाणक्यः- अधे दानीं क्व गतः?

चन्दनदासः न जानामि।

चाणक्य-कथं न ज्ञायते नाम? मो श्रेष्ठिन्! शिरसि भयम्, अतिदूरं तल्प्रतिकारः।

चन्दनदासः आर्य! किं मैं भयं दर्शयसि? सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षस्य गृहजनं न समर्पयामि, किं पुन रसन्तम्?

चाणक्य-चन्ददास! एष एवं ते निश्चयः?

चन्दनदासः- बाहम् एष एवं में निश्चयः।

प्रसंग- नाट्यांश संख्या 3 का प्रसंग देखे।

अनुवाद-चन्दनदास-हे आर्य! उस समय ही मेरे घर में अमात्य राक्षस का परिवार था।

चाणक्य- और अब कहां गया?

चन्दनदास- नहीं जानता हूँ।

चाणक्य क्यों नहीं जानते हो? अरे सेठ! सिर पर भय है और उससे बचने का उपाय बहुत दूर है।

चन्दनदास- हे आर्य! आप मुझे क्या भय दिखा रे हो? मेरे घर में अमात्य राक्षस के परिवार के होने पर भी मैं उसे समर्पित नहीं करुंगा फिर नहीं होने पर तो क्या कर सकता हूँ।

चाणक्य चन्दनदास! क्या यही तुम्हारा निश्चय है।

चन्दनदास हां, यही मेरा निश्चय है।

Created by Universal Document Converter

संधि प्रकरणम्

व्यजनसंधि

1. **श्चुत्व**

सच्चित् - सत् + चित्
उज्जवल: - उद् + ज्वल:
सज्जन: - सद् + जन:

2. **ष्टुत्व**

कृष्ण: - कृष् + न:
राष्ट्रम् - राष् + त्रम्
तट्टीका - तत् + टीका

3. **चर्त्व**

सत्कार: - सद् + कार:
विप्तकाल: - विपद् + काल:
उत्पन्न: - उद् + पन्न:

4. **जशत्व**

जगदीश: - जगत् + ईश:
दिगम्बर: - दिक् + अम्बर:
दिग्गज: - दिक् + गज:
अजन्त: - अच् + अन्त:
सदाचारम् - सत् + आचरम्
चलदनिशम् - चलत् + अनिशम्
व्यायामादुपजायते - व्यायामात् + उपजायते
तदेव - तत् + एव

5. **अनुस्वार**

सम् + सरणम् = संसरणम्
वयम् + अपि = वयमपि
लक्ष्मीम् + एव = लक्ष्मीमेव
धनम् + इति = धनमिति
सत्यम् + वद = सत्यं वद

विसर्ग संधि

1. **सत्व**

कश्चित् - क: + चित्
मूर्खाश्च - मूर्खा: + च
जन्मभुमिश्च - जन्मभूमि: + च
हरिश्शेते - हरि: + शेते
धनुष्टङ्कार - धनु: टङ्कार:
रामश्च - राम: + च

2. **रुत्व**

धेनुर्गच्छति -धेनु:+ गच्छति
प्रातर्गच्छति - प्रात: + गच्छति
प्रकृतिरेव - प्रकृति: + एव
निर्गुण: - नि: + गुण:
निर्बल: - नि: + बल:
दुर्वहम् - दु: + वहम्
पुनरपि - पुन: + अपि

3. **विसर्गलोप**

एष: + विष्णु: - एष विष्णु:
स: + शम्भु: - स शम्भु:

4. **उत्व**

कोऽपि - क: + अपि
प्रथमोधर्म: - प्रथम: + धर्म:
सरसोभवेत - सरस: + भवेत्
हिमकरोऽपि - हिमकर: + अपि
वयोरूप: - वय: + रूप:
अपूर्वोऽय - अपूर्व: + अयम्
कोऽत्र - क: + अत्र
सोऽपि - स: + अपि
यशोदा - यश: + दा
प्रस्तुतोऽयं - प्रस्तुत: + अयं

□□□□□□

Created by Universal Document Converter

समास प्रकरणम्

संस्कृत में समास 5 प्रकार के होते हैं।

1. अव्ययीभाव समास

प्रतिवचनम् - वचनं वचनं प्रति।

निर्बलम् - बलस्य अभावः।

समलम् - मलेन सहितम।

यथाशक्ति - शक्तिम् अनतिक्रम्य।

उपकृष्णम् - कृष्णस्य समीपम्।

निर्धनम् - धनस्य अभावः।

निर्मक्षिकम् - मक्षिकाणाम् अभावः।

अनुरूपम् - रुपस्य योग्यम्।

निर्गुणम् - गुणानाम् अभावः।

सहर्षम् - हर्षेण सहितम्।

2. द्विगु -

त्रिलोकी - त्रयाणां लोकानां समाहारः।

पञ्चपात्रम् - पञ्चानां पात्राणां समाहारः।

त्रिभुवनम् - त्रयाणां भुवानां समाहारः।

शतशकटीयानम् - शतानाम् शकटीयानां समाहारः।

3. कर्मधारय -

कज्जलमलिनम् - कज्जलम् इव मलिनम्

महावृक्षः - महान् वृक्षः

महाविनाश - महान् विनाश

महात्मानः - महान् च असौ आत्मा

सदाचारम् - शोभनम् आचारम्

कृष्णसर्पः - कृष्णः च असौ सर्पः

घनश्यामः - घन इव श्यामः

4. द्वन्द्व -

कुशलवौ - कुशः च लवः च

सूर्यचन्द्रयोः - सूर्यः च चन्द्रः च तयो

पितरौ/मातापितरौ - माता च पिता च

पाणिपादम् - पाणी च पादौ च तेषां समाहारः।

धर्मार्थौ - धर्मः च अर्थः च।

5. बहुव्रीहि -

निर्बलः - निर्गतं बलं यस्मात् सः।

विमूढधीः - विमूढा धीः यस्य सः।

प्रत्युत्पन्नमतिः - प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्य सः।

चतुराननः - चत्वारि आननानि यस्य सः।

कण्ठेकालः - कण्ठे कालः यस्य सः।

चक्रपाणिः - चक्रः पाणौ यस्य सः।

चन्द्रशेखरः - चन्द्रः शेखरे यस्य सः।

दिगम्बरः - दिशः अम्बरं यस्य सः।

❑❑❑❑❑❑

Created by Universal Document Converter

प्रत्यय

शतृ, शानच्, तव्यत्, अनीयर, क्तिन्, ल्युट्, तृच, मतुप, इन, ठन, त्व्, तल्, टाप्, ङीप।

शतृ

निवसन् - नि + वस् + शतृ
हसन् - हस् + शतृ
वितरन्ती - वितृ + शतृ
कुर्वतो - कृ + शतृ
चलत् - चल + शतृ
पश्यत: - दृश + शतृ
गच्छत् - गम् + शतृ

शानच्

सेवमान: - सेव + शानच्
लभमान: - लभ + शानच्

तव्यत्

सेवितव्य: - सेव + तव्यत्
हन्तव्य: - हन् + तव्यत्
कर्तव्य: - कृ + तव्यत्
द्रष्टव्य: - दृश् + तव्यत्

अनीयर

पठनीय: - पठ् + अनीयर
पूजनीय: - पूज् + अनीयर
दर्शनीय: - दृश् + अनीयर
करणीयम् - कृ + अनीयर
शङ्कनीय: - शङ्क + अनीयर

क्तिन्

सृष्टि: - सृज + क्तिन्
कृति: - कृ + क्तिन्
मति: - मन् + क्तिन्
उक्ति - वच् + क्तिन्

ल्यूट

लेखनम् - लिख् + ल्युट्
दर्शनम् - दृश् + ल्युट्
वदनम् - वद् + ल्युट्
सञ्चरणम् - सम् + चर + ल्युट्

तृच

कर्ता - कृ + तृच
नेता - नी + तृच
द्रष्टा - दृश + तृच्

मतुप

बुद्धिमान् - बुद्धि + मतुप्
श्रदावान् - श्रदा + मतुप्
भगवान - भग + मतुप्
धैर्यवान् - धैर्य + मतुप्
चक्षुष्मन्त: - चक्षुष् + मतुप्
गुणवान् - गुण + मतुप्
श्रीमान् - श्री + मतुप्

त्व

महत्वम् - महत् + त्व
लघुत्वम् - लघु + त्व
गुरुत्वम् - गुरु + त्व
मनुष्यत्वम् - मनुष्य + त्व

तल

देवता - देव + तल
लघुता - लघु + तल
गुरुता - गुरु + तल
सभ्यता - सभ्य + तल
कृतज्ञता - कृतज्ञ + तल

टाप्

अजा - अज् + टाप्
बालिका - बालक + टाप्
मालिका - माला + टाप्
भार्या - भार्य + टाप्

ङीप्

श्रीमती - श्रीमत् + ङीप
बुद्धिमती - बुद्धिमत् + ङीप
कुमारी - कुमार + ङीप
वितरन्ती - वितरत् + ङीप
प्रहरन्ती - प्रहरत् + ङीप

इन

धनिन् - धन् + इन
गुणिन् - गुण + इन
ज्ञानिन् - ज्ञान + इन
मन्त्री - मन्त्र + इन

Created by Universal Document Converter

उपसर्ग - प्रकरणम्

उपसर्ग 22 होते हैं।

(द्वाविंशतिः)

1. अव - अवज्ञा, अवरोध:, अवकाश:, अवगुण:, अवधारणा, अवमानना।
2. अप - अपव्यय:, अपमानम्, अपराध:।
3. अपि - अध्यक्ष, अधिष्ठाता।
4. निस् - निश्चल:, निष्काम्, निश्चय, निश्छल:।
5. निर - निरादर:, निर्धन:, निर्जनम्, निर्णायक:, निर्णय:।
6. दुर - दुराचरणम्, दुर्व्यहार:, दुर्वचनम्, दुर्जन:, दुरवस्था, दुर्भाग्यम्, दुर्बुद्धिः
7. आङ् (आ) - आदर:, आगमनम्, आमरणम्, आचरणम्, आ+नी = आनयति।
8. उत् - उज्जवल:, उत्सव:, उत्प्रेक्षा, उन्नति:, उद्धार:, उत्थानम्।

वाक्ये अव्ययानां प्रयोगः

- शशिना सह याति कौमुदी।
- क्रियां विना ज्ञानं भार:।
- सहसा विदधति न क्रियामविवेक: परमापदां पदम्।
- विपदि उच्चै: धैर्यम्
- वृक्षस्य उपरि खगा: तिष्ठन्ति।
- ग्रामाद् बहि: उद्यानमस्ति।
- ज्ञानं विना न मुक्ति:।
- वृक्षस्य अध: जना: सन्ति।
- सहसा कदापि कार्याणि न कुर्यात्।
- परिश्रमं विना कुत्र साफल्यम्।
- पुरा संस्कृतं जनभाषा आसीत्।
- कर्मणा एव नर: पूज्यते।
- धिक् मूर्खम्।
- स: उच्चै: अहसत्।
- धनं विना जीवनम् व्यर्थम्।
- सिंह: उच्चै: गर्जति।
- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गाद अपि गरीयसी।
- ग्रामात् बहि: नदी प्रवहति।

Created by Universal Document Converter

शब्दरूपाणि

छात्र	-	चतुर्थी	छात्राय	छात्राभ्याम्	छात्रेभ्य:
हरि	-	चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्य:
पितृ	-	तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभि:
गो	-	पंचमी	गो:	गोभ्याम्	गोभ्य:
गुरु	-	चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्य:
नदी	-	षष्ठी	नद्या:	नद्यो:	नदीनाम्
मातृ	-	द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृ:
धेनु	-	षष्ठी	धेन्वा:/धेनो:	धेन्वो:	धेनूनाम्
वधू	-	तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभि:

सर्वनामशब्दाः

अस्मद्	-	षष्ठी	मम	आवयो:	अस्माकम्
युष्मद्	-	तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभि:
सर्व (पु.)	-	तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वै:
सर्व (स्त्री.)	-	चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य:
तत् (पु.)	-	प्रथमा	स:	तौ	ते
तत् (स्त्री.)	-	तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभि:
यत् (पु.)	-	तृतीया	येन	याभ्याम्	यै:
यत् (स्त्री.)	-	चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्य:
किम् (पु.)	-	सप्तमी	कस्मिन्	कयो:	केषु
किम् (स्त्री.)	-	तृतीया	कया	काभ्याम्	काभि:

धातु - रूप

धातु		**पुरुष**					
भू	-	मध्यम पुरुष	-	लट्	भवसि	भवथ:	भवथ
गम्	-	प्रथम पुरुष	-	लोट्	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
लिख्	-	प्रथम पुरुष	-	लङ्	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
हन्	-	प्रथम पुरुष	-	लट्	हन्ति	हत:	हनन्ति
दा	-	प्रथम पुरुष	-	लट्	ददाति	दत्त:	ददति
जन्	-	प्रथम पुरुष	-	लट्	जायते	जायेते	जायन्ते
कृ	-	मध्यम पुरुष	-	लट्	करोषि	कुरुथ:	कुरुथ
क्रीड्	-	प्रथम पुरुष	-	लोट्	क्रीडतु	क्रीडताम्	क्रीडन्तु
चिन्त्	-	प्रथम पुरुष	-	लट्	चिन्तयति	चिन्तयत:	चिन्तयन्ति
त्यज्	-	प्रथम पुरुष	-	लोट्	त्यजतु	त्यजताम्	त्यजन्तु

आत्मनेपदम्

सेव्	-	मध्यम पुरुष	-	लट्	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
लभ्	-	उत्तम पुरुष	-	लट्	लभे	लभावहे	लभामहे

Created by Universal Document Converter

कारक प्रकरण

कारकों की संख्या 6 है।

संस्कृत में विभक्ति 7 होती है।

सम्बन्ध (षष्ठी विभक्ति) को कारक नहीं माना जाता है।

कर्ता कारक	- प्रथमा विभक्ति
कर्म कारक	- द्वितीया विभक्ति
करण कारक	- तृतीया विभक्ति
सम्प्रदान कारक	- चतुर्थी विभक्ति
अपादान कारक	- पंचमी विभक्ति
अधिकरण कारक	- सप्तमी विभक्ति

द्वितीय विभक्ति (कर्म कारक)

अभित: - राजमार्गम् अभित: वृक्षा: सन्ति।

परित: - ग्रामं परित: क्षेत्राणि सन्ति।

समया/निकषा - विद्यालयं निकषा देवालय: अस्ति।

धिक् - दुष्टं धिक् ।

प्रति - छात्रा विद्यालयं प्रति गच्छति।

तृतीया विभक्ति (करण कारक)

सह, साकम्, समम्, साधर्म इन शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

- पिता पुत्रेण सह गच्छति।

- अलम् शब्द के योग में तृतीया विभक्ति होती हैं।

- अलं विवादेन।

हसितेन।

- अङ्ग विकार में तृतीया विभक्ति होती हैं।

स: नेत्रेण काण: अस्ति।

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

नम: के योग में - श्री गणेशाय नम:।

क्रुध के योग में - पिता पुत्राय क्रुध्यति।

रूच् के योग में - बालकाय मोदका: रोचन्ते।

चतुर्थी विभक्ति होती है।

पंचमी विभक्ति (अपादान कारक)

भू धातु के योग - गंगा हिमालयात् प्रभवति।

जन् धातु के योग - कामात् क्रोध: जायते।

में पंचमी विभक्ति होती है।

भी (भय) धातु के योग - बालक: सिंहात् बिभेति।

बहि: के योग में पंचमी - छात्रा: विद्यालयात् बहि: गच्छति।

तरप् प्रत्यय के योग में पंचमी - राम: श्यामात् पटुतर: अस्ति।

साधु और असाधु शब्दों के योग में सप्तमी होती है।

कृष्ण: मातरि साधु:।

जहां बहुत में से (समुह में से) एक को श्रेष्ठ बताया जाये वहां षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती हैं।

कविनां / कविषु कालिदास: श्रेष्ठ असित।

❑❑❑❑❑❑

Created by Universal Document Converter

हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद

1.	ज्ञान के बिना सुख नहीं है	–	ज्ञानं बिना सुखं नास्ति।
2.	पेड़ से पत्ते गिरते हैं	–	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
3.	गंगा हिमालय से निकलती है	–	गंगा हिमालयात् प्रभवति।
4.	माता पुत्र पर स्नेह करती है	–	माता पुत्रे स्निह्यति।
5.	मोहन कलम से लिखता है	–	मोहनः कलमेन लिखति।
6.	नगर के चारों ओर वृक्ष है	–	नगरं परितः वृक्षाः सन्ति।
7.	गुरु शिष्य पर क्रोध करता है	–	गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
8.	वह पैर से लंगड़ा है	–	सः पादेन खंजः अस्ति।
9.	मोहन राम से सुन्दर है	–	मोहनः रामात् सुन्दरतरः।
10.	बालक को लड्डु अच्छा लगता है	–	बालकाय मोदकं रोचते।
11.	जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है	–	जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी
12.	हमें संस्कृत पढ़नी चाहिए	–	वयम् संस्कृतम् पठेम।
13.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है	–	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
14.	वह आँख से काणा (अन्धा) है	–	सः नेत्रेण काणः।
15.	वह हरि को भजता है	–	सः हरिं भजति।
16.	दूर्जन को धिक्कार है	–	धिक दुर्जनम्।
17.	नदीयों में गंगा पवित्र है	–	नदीषु गंगा पवित्रतमा।
18.	पर्वतों में हिमालय ऊँचा है	–	पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः।
19.	बालक सिंह से डरता है	–	बालकः सिंहात् बिभेति।
20.	काम से क्रोध उत्पन्न होता है	–	कामात् क्रोधः जायते।

❑❑❑❑❑❑

Created by Universal Document Converter

संख्याज्ञानम्

800	-	अष्टशतम्।	510	-	दशाधिकपञ्चशतम्।
625	-	पञ्चविंशत्यधिक षट् शतम्।	1100	-	शताधिकसहस्त्रम्।
121	-	एकविंशत्याधिकशतम्।	2001	-	एकोत्तर द्विसहस्त्र।
181	-	एकाशीत्यधिकशतम्	2005	-	पञ्चोत्तर द्विसहस्त्र।

□□□□□□

अपठित गद्यांश

अधोलिखित गद्यांश पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानां यथानिर्देश उत्तराणि लिखत ।

1. सताम् आचारः सदाचारः इति कथ्यते। सज्जनाः यथा आचरन्ति तथैव आचरणं सदाचारो भवति। ते सर्वैः सह शिष्टतापूर्वक व्यवहारं कुर्वन्ति। तेषु सत्याचरणं, वाक्संयमः, विनयः, अक्रोधः, क्षमा, धर्माचरणमित्यादयः, सद्गुणाः दृश्यते। सदाचारस्य, समाजस्य, जनस्य च उन्नत्यै सदाचारस्य महती वर्तते ।सदाचारेणैव जनाः ब्रह्मचारिणो भवन्ति। सदाचारेणैव शरीरपरिपुष्टं भवति। सदाचारेण बुद्धिः वर्धते ।सदाचारेणैव मनुष्यः सत्यभाषणम् अन्यच्च सत्कर्म कर्तुं प्रवृत्तो भवति। अतएव पूर्वैः महर्षिभिः आचारः परमो धर्मः इत्युक्तम्।

संसारे सर्वत्र सदाचारस्यैव महत्वं दृश्यते। ये सदाचारिणो भवन्ति, ते एव सर्वत्र आदरं लभन्ते। वेदरामायणमहाभारतेष्वपि सदाचारस्य महिमा वर्णिता वर्तते। सदाचाराभावेनैव चतुर्वेदविदपि रावणो राक्षस इति कथ्यते। अतः सर्वैः जनैः स्वोन्नत्यै सदा सदाचारः पालनीयः।

प्रश्नाः-

(1-2) एकपदेन उत्तरत: -

(1) केषाम् आचारः सदाचारः इति कथ्यते ?

(2) केन बुद्धि वर्धते ?

(3-5) पूर्णवाक्येन उत्तरत :-

(3) सज्जनाः सर्वैः सह कीदृषं व्यवहारं कुर्वन्ति ?

(4) के सर्वत्र आदर लभन्ते ?

(5) सर्वे जनाः कथं सदाचारः पालनीयः ?

(6) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

(7) उपर्युक्त गद्यांशस्य संक्षिप्तिकरणं कुरुत।

(8) वर्धते इति क्रियापदस्य गद्यांषे कर्तृपदं किमस्ति।

(9) महर्षिभिः इति विशेष्य पदस्य गद्यांशात् विशेषणपदं चित्वा लिखत।

उत्तराणि -

(1) सताम्

(2) सदाचारेण

(3) सज्जनाः सर्वैः सह शिष्टतापूर्वकं व्यवहारं कुर्वन्ति ।

(4) सदाचारिणः सर्वत्र आदरं लभन्ते ।

(5) सर्वैः जनाः स्वोन्नत्यै सदा सदाचारः पालनीयः

(6) सदाचारस्य महत्त्वम्।

(7) संक्षिप्तिकरणम् - सज्जनानां आचरणं सदाचारः कथ्यते। अस्मिन् आचारणे। सत्यभाषणं, वाक्संयमः, अक्रोधः, क्षमा, धर्म इत्यादयः सद्गुणाः आयन्ति। स्वस्य राष्ट्रस्य च उन्नत्यै सदाचारस्य आवश्यकता भवति। अस्यमेव धर्मः प्राचीन ग्रन्थेषु महर्षिभिः आचारः परमो धर्मः इति उक्तः ।

(8) बुद्धिः।

(9) पूर्वैः।

Created by Universal Document Converter

2. इदं हि विज्ञानप्रधानं युगं।'विशिष्टं ज्ञानं विज्ञानम्' इति कथ्यते। अस्यां शताब्द्यां सर्वत्र विज्ञानस्यैव प्रभावो दरीदृश्यते । अधुना नहि तादृशं किमपि कार्यं यत्र विज्ञानस्य साहाय्यं नापेक्ष्यते। आवागमने, समाचारप्रेषणे, दूरदर्शने, सम्भाषणे, शिक्षणे, चिकित्साक्षेत्रे मनोरंजन- कार्ये, अन्नोत्पादने, वस्त्रनिर्माणे, कृषिकर्मणि तथैवान्य कार्य-कलापेषु विज्ञानस्य प्रभावस्तदपेक्षा च सर्वत्रैवानुभूयते ।

सम्प्रति मानव: प्रकृतिं वंशीकृत्य तां स्वेच्छाया कार्येषु नियुक्ते। तथाहि वैज्ञानिकैरनेक आविष्कारा: विहिता:। मानवजाते: हिताहितम् अपश्यद्धि: वैज्ञानिकै: राजनीतिविज्ञैर्वा परमाणुशक्ते: अस्त्रनिर्माणे विशेषत: उपयोगो विहित: तदुत्पादितं च लोकध्वंसकार्यम् अतिधोरं निर्घृणं च। विज्ञानस्य दोष: न वा परमाणुशक्तेरपराध: पुरुषापराध: खलु एष: ।

अतोऽस्य मानवकल्याणार्थमेव प्रयोग: करणीय:।

प्रश्ना:-

(1-2) एकपदेन उत्तरत: ।

(1) विशिष्टं ज्ञानं किं कथ्यते ?

(2) विज्ञानस्य प्रयोग: कुत्र करणीय: ?

(3-5) पूर्णवाक्येन उत्तरत:

(3) अधुना समस्तकार्यकलापेषु कस्य प्रभाव: अनुभूयते ?

(4) अद्य: वैज्ञानिकै: परमाणुशक्ते: विशेषत: कुत्र उपयोगो विहित:?

(5) मानवकल्याणार्थमेव कस्य प्रयोग: करणीय: ?

(6) उपर्युक्तगद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत ।

(7) अस्य गद्यांशस्य संक्षिप्तीकरणं लिखत ।

(8) हितम् इत्यस्य गद्यांशे विलोमपदं किं प्रयुक्तम् ।

(9) 'विज्ञानप्रधानम्' इति विशेषणस्य गद्यांशे विशेष्यपदम् किम् ?

उत्तराणि ।

(1) विज्ञानम् ।

(2) मानवकल्याणार्थम् ।

(3) अधुना समस्तकार्यकलापेषु विज्ञानस्य प्रभाव: अनुभूयते ।

(4) अद्य वैज्ञानिके: परमाणुशक्ते: विशेषत: अस्त्रनिर्माणे एव उपयोगो विहित:।

(5) मानवकल्याणार्थमेव परमाणुशक्ते: प्रयोग: करणीय: ।

(6) विज्ञानस्य प्रभाव:।

(7) संक्षिप्तिकरणम् - अस्मिन् युगे विज्ञानस्य प्रभाव सर्वत्र दृश्यते। विशिष्टं ज्ञानमेव विज्ञानम्। जीवनस्य सर्वेषु क्षेत्रेषु कार्यकलापेषु च विज्ञानस्य प्रयोग:। मानव-विनाशाय न कृत्वा मानवकल्याणाय एव करणीय:।

(8) अहितम् ।

(9) युगम् ।

3. अद्ये प्रात: कालम्। अतीव रमणीयं दृष्यम्। प्रात: काले वातावरणम्, अतीव शुद्धं सौम्यं च भवति। सर्वत्र शीतलवायु: प्रवहति। सूर्य: उदेति। प्रभातं भवति। सूर्यस्य प्रकाश: सर्वत्र प्रसारितं। उद्याने पुष्पाणि विकसन्ति । तेषु भ्रमरा: गुञ्जन्ति। मनुष्या: उत्तिष्ठन्ति। ते सूर्यं नमन्ति । छात्रा: प्रात: काले सूर्योदयात्, पूर्वं शयनं त्यजन्ति। ते ईश्वरं नमन्ति। स्वजननी-जनकौ नमन्ति। स्नानं कुर्वन्ति। प्रातराशं कृत्वा विद्यालयं गच्छन्ति । कृषका: क्षेत्राणि गच्छन्ति। गोपालका: दुग्धम् आनयन्ति। समाचारपत्रवाहका: समाचारपत्राणि वितरन्ति:। धार्मिका: देवालयं गच्छन्ति। प्रात: काले शुद्ध-वातावरणे भ्रमणमपि अतीव हितकरं भवति । प्रात: काले केचन जना: भ्रमन्ति, केचन व्यायामं कुर्वन्ति केचन क्रीडन्ति। इत्थं सर्वे मनुष्या: अस्मिन् समये स्वकीयकार्येषु संलग्ना: भवन्ति।

प्रश्ना:-

(1-2) एकपदेन उत्तरत:-

(1) प्रात:काले दृश्यं कीदृशं भवति?

(2) छात्रा: कौ नमन्ति ?

(3-5) पूर्णवाक्येन उत्तरत: -

(3) प्रात: काले वातावरणं कीदृशं भवति ?

(4) कदा भ्रमणम् अतीव हितकरं भवति ?

(5) सर्वे मनुष्या: अस्मिन् समये कुत्र संलग्ना: भवन्ति?

(6) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत ।

(7) उपर्युक्त गद्यांशस्य संक्षिप्तिकरणं कुरूत ।

(8) 'दृश्यम्' इति विशेषणस्य गद्यांशात विशेषणपदं चित्वा लिखत।

(9) 'कृषका:' इति कर्तृपदस्य गघांशे क्रियापदं किमस्ति ?

उत्तराणि -

(1) रमणीयम्।

(2) स्वजननीजनकौ।

(3) प्रात: काले वातावरणं अतीव शुद्धं सौम्यं च भवति ।

(4) प्रात: काले शुद्धवातावरणे भ्रमणम् अतीव हितकरं भवति ?

(5) सर्वै: मनुष्या: अस्मिन् समये स्वकीयकार्येषु संलग्ना: भवन्ति।

(6) प्रात: कालम् ।

(7) संक्षिप्तिकरणम् - प्रात: कालस्य दृश्यम् अतीव रमणीयं शुद्धं सौम्यं च भवति। प्रात: काले सर्वत्र शीतलवायु: प्रवहति । उद्यानेषु भ्रमरा: गुञ्जन्ति, खगा: गीतं गायन्ति। सर्वे मनुष्या: स्वकीयकार्येषु संलग्ना: भवन्ति ।प्रात: काले भ्रमणमपि अतीव

Created by Universal Document Converter

हितकरं भवति ।

(8) रमणीयम् ।

(9) गच्छन्ति ।

4. अस्मिन् संसारे असंख्या: भाषा: सन्ति। तासु भाषासु संस्कृतभाषा सर्वोत्तमा विद्यते । संस्कृता परिष्कृता दोषरहिता एव संस्कृतभाषा कथ्यते। गीर्वाणगी: सुरवाणी इत्यादिभि: शब्दै: संबोध्यते। एतानि नामानि एव अस्या: भाषाया: महत्वं सूचयन्ति।

संस्कृतभाषा जगत: सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति। सर्वभाषाणां मूलरूप ज्ञानाय एतस्या आवश्यकता भवति। यादृशं महत् साहित्यं संस्कृत-भाषाया: अस्ति तादृशं अन्यासां भाषाणां नास्ति। अस्यामेव भाषायां ब्राह्मण-ग्रन्था: आरण्यका: अध्यात्मविषयप्रतिपादिका उपनिषद: वेदादयश्च सन्ति। आदिकाव्यं रामायणं वीरकाव्यं महाभारतमपि संस्कृतस्य गौरव वर्धयत:। अनयो: ग्रन्थयो: विषयं गृहीत्वा एव विशालस्य (संस्कृत) साहित्यस्य रचना संजाता।

प्रश्ना:-

(1-2) एकपदेन उतरत:-

(1) सर्वोत्तमा भाषा का विद्यते ?

(2) वीरकाव्यं किम् कथ्यते ?

(3-5) पूर्णवाक्येन उत्तरत:

(3) संस्कृतभाषा कै: शब्दै: संबोधयते ?

(4) कीदृषी भाषा संस्कृतभाषा कथ्यते ?

(5) जगत: सर्वासां भाषाणां जननी का ?

(6) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

(7) उपर्युक्तगद्यांशस्य संक्षिप्तिकरणं कुरूत।

(8) 'संस्कृतभाषा' इत्यस्य पर्यायपदं किमस्ति।

(9) 'असंख्या:' इति विशेषणस्य गद्यांशात् विशेष्यपदं चित्वा लिखत-

उत्तराणि-

(1) संस्कृतभाषा।

(2) महाभारतम्।

(3) संस्कृतभाषा देवभाषा, गीर्वाणगीरा, सुरवाणी इत्यादय: शब्दै: सम्बोध्यते।

(4) संस्कृता परिष्कृता दोषरहिता भाषा एव संस्कृतभाषा कथ्यते।

(5) जगत: सर्वासां भाषाणां जननी संस्कृतभाषा अस्ति ।

(6) संस्कृतभाषाया: महत्त्वम् ।

(7) संक्षिप्तिकरणम् - संस्कृतभाषा सर्वोत्तमा, प्राचीनतमा, सर्वासां भाषाणां च जननी वर्तते। संस्कृता, परिष्कृता, दोषरहिता च भाषा संस्कृतभाषा कथ्यते। अस्यामेव भाषायां वेद-वेदाङ्ग, उपनिषद्- महाभारतादय: ग्रन्था: रचिता: सन्ति । सर्वभाषाणां मूलरूपं ज्ञानाय एतस्या: आवश्यकता भवति । इयं भाषा देवभाषा गीर्वाणगी:, सुरवाणी च कथ्यते।

(8) देवभाषा, सुरवाणी च इत्यादय:।

(9) भाषा:।

(5) पुण्योऽस्माकं देश: भारतवर्ष:। न केवलं भौगोलिकदृष्ट्या अपितु सांस्कृतिदृष्ट्या अपि अस्य देशस्य महत्वपूर्णं स्थानं वर्तते। विश्वेऽस्मिन् भारतीयसंस्कृति: विश्ववन्द्या: सर्वग्राह्याष्च। भारतदेशे विभिन्नसम्प्रदायानां विविधभाषाणाम् अनेकदेवानाम, भिन्नभिन्नानां दर्शनानां च प्रचार: प्रचलत्येव। तथापि भारतीयानां भिन्नत्वे एकत्वमिति कथनं सर्वेष्वपि क्षेत्रेषु दृश्यते ।

भारतदेश: विश्वस्य सर्वोत्कृष्टं वृहत्स्वरूपात्मकं राष्ट्र वर्तते। अत्र देवस्वरूप: हिमालय: मुकुटमणिरिव शोभते। भारते मधुरजलयुक्ता: गंगायमुनासरयूकृष्णाद य: नद्यै: वहन्ति। अयं देश: नानातीर्थै: रमणीय: मुनिजनदेवै: च वन्दनीयोऽस्ति। भारतस्य भूमि: अध्यात्ममयी, गौरवपूर्णा शांतिवध, सुखदा, सस्यष्यामाला, हिरण्यरूपा अतिकमनीया चास्ति। रत्नाकरोऽपि स्वस्य रत्नाकरत्वं पुनरपि प्रासुं भारतभव्यभूमै: चरणौ वृणीते।

भारतदेश: देवैरूपास्य: मुनिभिष्च सेव्य: वर्तते । वेदपुराणेषु अपि अस्य महिमा वर्णिता। धन्यतमोऽयं भारतदेश:।

प्रश्ना:

(1-2) एकपदेन उतरत:-

(1) अस्माकं देश: भारतवर्ष: कीदृश:?

(2) भारतदेश: कै: वन्दनीयोऽस्ति ?

(3-5) पूर्णवाक्येन उत्तरत: -

(3) विश्वेऽस्मिन का विश्ववन्द्या: सर्वग्राह्यश्च ?

(4) भौगोलिक दृष्ट्या कस्य महत्वपूर्णं स्थानं वर्तते?

(5) क: मुकुटमणिरिव शोभते ?

(6) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत-

(7) उपर्युक्त गद्यांशस्य संक्षिप्तिकरणं कुरुत -

(8) 'देवस्वरूप:' इति विशेषणस्य विशेष्यपदं किम् ?

(9) 'दु:खदा' इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत ?

उत्तराणि-

(1) पुण्य:।

(2) मुनिजनदेवै:।

(3) विश्वेऽस्मिन् भारतीयसंस्कृति विश्ववन्द्या सर्वग्राह्यश्च।

Created by Universal Document Converter

(4) भौगोलिकदृष्ट्या भारतदेशस्य महत्वपूर्णं स्थानं वर्तते ।

(5) हिमालयः मुकुटमणिरिव शोभते।

(6) भारतदेशस्य वैशिष्ट्यम्।

(7) संक्षिप्तिकरणम् - अस्माकम् भारतदेशः पुण्यः विश्वस्य सर्वोत्कृष्टं जनतंत्रात्मकं राष्ट्रं चास्ति। अस्य देशस्य न केवलं भौगोलिकदृष्ट्या अपितु सांस्कृतिकदृष्टयापि महत्वपूर्णं स्थानमस्ति। भारतीयसंस्कृतिः विश्ववन्द्याः सर्वग्राह्यञ्च वर्तते। अयं देशः नानातीर्थैः रमणीयः मुनिजनदेवैश्च वन्दनीयोऽस्ति।

(8) हिमालयः।

(9) सुखदा ।

अधोलिखित पंद्याशस्य संस्कृतभावार्थं लिखत।

(1) व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरूद्धमपि भोजनम्।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ।

भावार्थः- यः जनः नित्यं व्यायामं करोति तस्य सुपक्वम्, अपक्वम् वा प्रतिकूलं च भोजनं सरलतया (निर्दोषम्) जीर्यते परिच्यते वा।

(2) सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते ।।

भावार्थः- फलैः छायया च युक्तः विशाल वृक्षः एव सदैव सेवनीयः। यतोहि तादृषः वृक्षः सदैव लाभदायकः भवति। यदि कदाचित् वृक्षे फलं नः स्यात् किन्तु छाया तु तत्र सर्वदा प्राप्यते एव।

(3) अमन्त्रमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषः नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः ।।

भावार्थः- यथा मन्त्रहीनं विवेकहीनं वा अक्षरं न भवति, तथा य औषधीय गुणविहीनम् आधारं (मूलम्) न भवति, तथैव संसारे कोऽपि जनः अयोग्यः न भवति, सर्वेषु जनेषु कोऽपि विषेषता अवष्यमेव भवति, किन्तु तस्यं योग्यतायाः संयोजकः ज्ञाता च दुर्लभं भवति।

(4) शरीरायासजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम्।
तत्कृत्वा तु सुखं देहं विमृद्नीयात् समन्ततः।।

भावार्थः- व्यायामस्य महत्वं प्रतिपादन् कथित यत् शारीरिकपरिश्रामात् उत्पन्नं कर्म व्यायामः इति नाम्ना कथ्यति। व्यायामं कृत्वा सुखेन शरीरस्य सर्वतः मर्दनं (तैललेपनम्) करणीयम्।

अधोलिखित पद्यांशस्य संस्कृते अन्वयः।

(1) न चैनं सहसाक्रम्य जरा समाधिरोहति ।
स्थिरीभवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च ।।

अन्वयः- जरा एनम् सहसा आक्रम्य न समधिरोहित । व्यायामाभिरतस्य च मासं स्थिरीभवति।

(2) हृदिस्थानास्थितो वायुर्यदा वक्त्रं प्रपद्यते ।
व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्धस्य लक्षणम् ।।

अन्वयः- व्यायामं कुर्वतः जन्तोः हृदिस्थानस्थितः वायु यदा वक्त्रं प्रपद्यते तदबलार्धस्य लक्षणम्।

(3) वयोबलशरीराणि देशकालाशनानि च।
समीक्ष्य कुर्याद व्यायाममन्यथा रोगमाप्नुयात्।।

अन्वयः -वयोबलशरीराणि देश-काल- अशनानि च समीक्ष्य व्यायामं कुर्याद्, अन्यथा रोगम् आप्नुयात् ।

(4) आलस्य हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपुः ।
नास्तुद्यमसयो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ।।

अन्वयः- मनुष्याणां शरीरस्थः महान् शत्रुः आलस्यम् । उद्यमसमः, बन्धुः न अस्ति, यं कृत्वा (मनुष्यः) न अवसीदति ।

(5) सम्पतौ च विपतौ च महतामेकरूपता।
उदये सविता रक्तो रक्तअस्तमये तथा ।।

अन्वयः - महताम् संपतौ विपतौ च एकरुपता भवति यथा सविता उदये रक्तः भवति, तथा अस्तमये च रक्तः भवति।

(6) विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिनिरर्थकम्
अश्वश्चेद धावने वीरः भारस्य वहने खरः।।

अन्वयः- विचित्र संसार खलु किञ्चिद् निरर्थक नास्ति। अश्वः चेत् धावने वीरः (तर्हि) भारस्य वहने खरः (वीरः) अस्ति ।

(7) पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याधनं महत्
पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्तिस्तत्कृज्ञता 117 11

अन्वयः- पिता बाल्ये पुत्राय महत् विद्याधनं यच्छति। अस्य पिता किं तपः तेपे इति उक्तिः तत्कृता।

❑❑❑❑❑❑

Created by Universal Document Converter

पत्रं लेखनम्

1. **भवती मोनिका/ स्वकीया सखीं अभिलाषा प्रति स्वदिनचार्यायाः विषये पत्रं लिखत। मंजूषा सहायत्या पूरयतः।**

(ज्ञातुम, संध्यादिकं, दिनचर्या, विद्यालयं, उत्तिष्ठामि, तत्रास्तु) !

प्रिय सखी अभिलाषा।

सीकरतः

दिनांक ...../..... / 2023

अत्र कुशलं.......।आशा से भवती कुशलिनी, भवती मय दिनचर्या .... इच्छसि। अतः पत्रं लिखामि। अहम् पंच वादने ....। ततः स्नानं पश्चात् व्यायाम करामि। सप्तवादनतः अध्ययन प्रचलति। दशवादने भोजनम् कृत्वा। .... गच्छामि। सायं पंच वादने क्रीडामि। सायं पंच वादने क्रीडामि। सायं सप्तवादने .... कृत्वा भोजनं करामि। रात्रौ दशवादनपर्यन्तं पठामि।

इत्यमेव मम ....।

भवत्याः सखी

मोनिका

2. **भवान् सुरेशः मातरं प्रति पत्र मंजूषा पदं सहायत्या लिखत-**

(सम्यक, मुख्यातिथिः, वार्षिकोत्सवः, सीकरः पितरम्, अभिनयम्)

पूजयभायाः मातृचरणः।

....

दिनांक ...../..... / 2023

नमोनमः। अत्र कुशलं तत्रास्तु। मम विद्यालये .... आसीत्।

तत्र अहम् एकम् .... कृतवान्। मन्त्रिमहोदयः .... आगतवान् मम अध्ययनम् .... चलति। गृहे सर्वेभ्यः नमोनमः अहम् .... प्रणमामि।

भवदीयः

सुरेशः

Created by Universal Document Converter

3. भवान् दशम्याः कक्षायाः सुनिलः अस्ति। स्थानान्तरण प्रमाण पत्र प्राप्तुं स्व प्रधानाचार्याय प्रार्थना पत्रं लिखत।

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयः

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयः

रामसिंहपुरा (नेछवा), सीकर

विषय : स्थानान्तरण प्रमाण पत्र प्राप्त्यर्थम्।

महोदयः

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदनम् अस्ति। यत् मम पितुः स्थानान्तरण जयपुरनगरे संजातम् । वयम् सर्वेऽपि परिवारिक जनाः तत्रेव गमिष्यामः। अहं अत्र पठितुं असमर्थोऽस्मि।

अतः प्रार्थना अस्ति। यत् महयं स्थानान्तरणं प्रमाण पत्रं प्रदाय अनुग्रहिष्यन्ति श्रीमन्तः।

दिनांकः ..../.........../ 2023

भवताम् आज्ञाकारी शिष्यः

सुनिलः

कक्षा - दशमी

4. भवान् विकासः विद्यालयस्य शुल्कमुक्त्यर्थं स्वस्य प्रधानाचार्याय पत्रं लिखत।

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयः

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयः

सीकर (राजस्थान)।

विषय : शुल्कमुक्त्यर्थ प्रार्थना पत्रम्।

महोदयः

उपर्युक्त विषयान्र्तगत निवेदनम् अस्ति। यत् अहं भवतां विद्यालये दशम्यां कक्षायां पठामि। मम पिता अतीव निर्धनः कृषकः अस्ति। अतः मम परिवारस्य आर्थिकदशा समीचीना नास्ति। मम पिता मदीयं विद्यालय शुल्क प्रदातु असमर्थः अस्ति।

अतः प्रार्थना अस्ति यत् महयं शुल्कमुक्ति प्रदाय अनुग्रहिष्यन्ति श्रीमन्तः।

दिनांकः ..../.........../ 2023

भवताम् आज्ञाकारी शिष्यः

विकास

कक्षा - दशमी

Created by Universal Document Converter

5. **भवान् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामसिंहपुराः दशम्याः कक्षायाः छात्राः मोनिका अस्ति। स्व विद्यालयस्य प्रधानाचार्याय आवश्यक कार्यवशात् दिन द्वयस्य अवकाशार्थ प्रार्थना पत्रं लिखत-**

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयः

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयः

रामसिंहपुरा (सीकर)।

विषय : दिन द्वयस्य अवकाशार्थ प्रार्थना पत्रम्।

महोदयः

उपर्युक्त विषयान्तर्गते निवेदनम् अस्ति। यत् मम् गृह अत्यावश्यकम कार्य वर्तते। अतः अहं विद्यालयम् आगन्तुं समर्थः नास्मि। प्रार्थना अस्ति यत् दिनांक 22.1.2023 तः 23.1.2023 दिनांक पर्यन्तं दिन द्वयस्य अवकाशं स्वीकृत्य माम् अनुगृहिष्यन्ति।

दिनांकः ..../.........../ 2023

भवताम् आज्ञाकारी शिष्या

मोनिका

कक्षा - दशमी

❑❑❑❑❑❑

1. **क्रमरहितानां षड्वाक्यानां क्रमपूर्वकं संयोजनं कुरुत-**

(i) एकदा प्रातः श्रृगालः वकम् अवदत् श्वं त्वं मया सह भोजनं कुरु।

(ii) कुटिलः श्रृगालः स्थाल्यां वकाय क्षीरोदनम् अयच्छत।

(iii) एकस्मिन् वने श्रृगालः वकः च निवसतः स्म।

(iv) भोजनकाले वकस्य चञ्चुः स्थालीतः भोजनग्रहणे समर्था न अभवत्।

(v) सः वकः भोजनाय अग्रिमदिने श्रृगालस्य निवासम् अगच्छत्।

(vi) वकः केवलं क्षीरोदनम् अपश्यत् तु श्रृगालः सर्वम् अभक्षयत्।

उत्तर : (iii), (i), (v), (ii), (iv), (vi)

2. (i) घटे जलम् अल्पम् आसीत्।

(ii) तस्य मस्तिष्के एकः विचारः समागतः।

(iii) एकः पिपासितः काकः आसीत्।

(iv) सः पाषाणखण्डानि घटे अक्षिपत्, जलं च उपरि आगतम्।

(v) सः वने एकं घटम् अपश्यत्।

(vi) जलं पीत्वा काकः ततः अगच्छत्।

उत्तर : (iii), (v), (i), (ii), (iv), (vi)

3. (i) तेषां वचनं श्रुत्वा कूर्मः क्रुद्धः जातः।

(ii) यदि त्वम् वदिष्यसि तदा तव मरणं निश्चितम्।

(iii) अहं काष्ठदण्डमध्ये अवलम्ब्य युवयोः पक्षबलेन सुखेन गमिष्यामि।

(iv) कूर्मः दण्डात् भूमौ पतितः गोपालकैः सः मारितः।

(v) काष्ठदण्डे लम्बमानं कूर्मं गोपालकाः अपश्यन्।

(vi) किन्तु अत्र एकः अपायोऽपि वर्तते।

उत्तर : (iii), (vi), (ii), (v), (i), (vi)

❑❑❑❑❑❑

Created by Universal Document Converter

प्रश्न 1. अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्त शब्दानां सहायतया 'बुद्धे चातुर्यम्' इति विषयोपरि संस्कृते अष्ट्वाक्यानि लिखत-

(काकः, घटम्, प्रस्तरखण्डम्, अल्पम्, तृषितः, उद्यानम्, सूर्यतापः, अगच्छत्, प्रसन्नो, सफलम्)

उत्तरम् - वाक्यानि -

(i) एकदा एकः काकः इतस्ततः अभ्रमत्।

(ii) तदा सूर्यतापः अत्यधिकः आसीत्। तेन अतीव तृषितः अभवत्।

(iii) सः जलम् अन्वेष्टुम् उद्यानं प्रति गच्छति। तत्र एकं घटं पश्यति।

(iv) घटं विलोक्य काकः प्रसन्नो अभवत्

(v) तस्मिन् घटे अल्पम् जलम् आसीत्।

(vi) सः घटे एकैकं प्रस्तरखण्डं निक्षिपति।

(vii) तेन जलम् उपरि आगच्छति, जलं पीत्वा च काकः स्वस्थ आवासं प्रति अगच्छत्।

(viii) उद्यमेन कार्यं सफलं भवति।

प्रश्न 2. अधः चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया "पुत्रीं रक्षत पुत्रीं पाठयत" इति विषये अष्टवाक्यानि संस्कृत भाषायां लिखत।

(पूज्यन्ते, प्रथमाशिक्षिका, संरक्षणस्य, ध्येयवाक्यम्, छात्रा, महत्पापम्, पुस्तकम्, समाजस्य, विकासः)

Created by Universal Document Converter

उत्तरम् - वाक्यानि -

(i) अस्मिन् चित्रे "पुत्रीं रक्षत पुत्रीं पाठयत" इति ध्येयवाक्यं लिखितम्।

(ii) चित्रे एका छात्रा वर्तते।

(iii) तस्याः हस्ते पुस्तकं वर्तते।

(iv) अद्य सर्वत्र बालिकानां संरक्षणस्य तासां शिक्षायाः च प्रचार-प्रसारः प्रचलति।

(v) भ्रूणहत्या महत्पापं मन्यते।

(vi) स्त्री एव सन्ततेः प्रथमा शिक्षिका भवति।

(vii) समाजस्य विकासं तु स्त्रीशिक्षया सम्भवति।

(viii) कथितम् एव "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।"

प्रश्न 3. अधः प्रदत्त चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन अष्टवाक्यानि निर्माय लिखत।

(वर्षा, मम, मेघः, छत्रम, गर्ज, नीड़े, विद्यालयः, पक्षिशावकः, वृक्षाः, जलमयम्)

उत्तरम् - वाक्यानि -

(i) अस्मिन् चित्रे वर्षा दृश्यते।

(ii) वर्षाकाले मेघः उच्चैः गर्जति।

(iii) वर्षाकाले नीडे पक्षिशावकः तिष्ठति।

(iv) बालकाः छत्रं धृत्वा विद्यालयं प्रति गच्छति।

(v) वर्षाकाले सर्वं जलमयं दृश्यते।

(vi) वर्षाजलं लाभदायके भवति।

(vii) वर्षाकाले वृक्षाः स्वच्छाः भवन्ति।

Created by Universal Document Converter

प्रश्न 4. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायता सड़क सुरक्षा विषय अष्ट वाक्यानि संस्कृत भाषायां लिखत।

(राजमार्गेषु, चतुष्पथेषु, तीव्रगत्या, असावधानतया, यातायातस्य, नियमानाम्, नियन्त्रिता:, सड़क दुर्घटनाया: निर्धारित मार्गेषु)

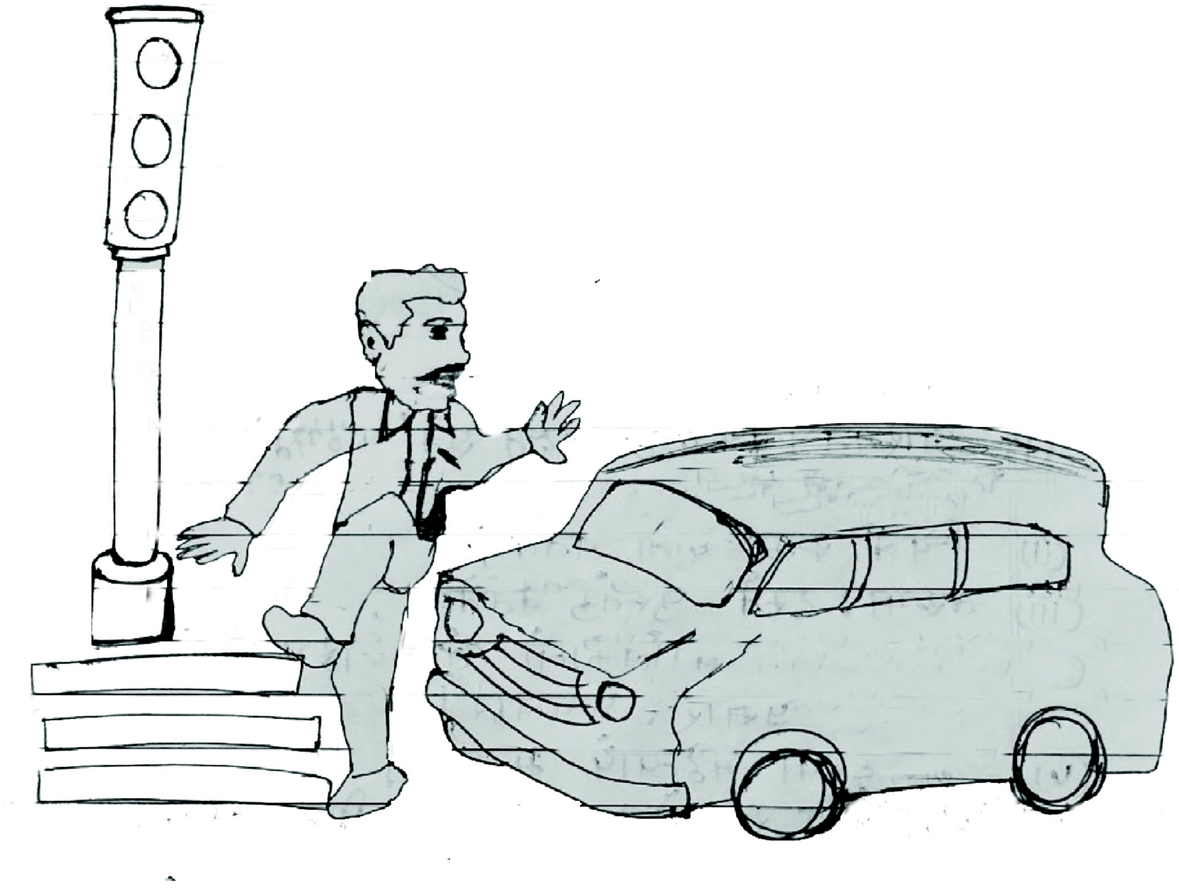

उत्तरम् - वाक्यानि -

(i) इदं चिंत्र सड़क दुर्घटनाया: वर्तते।

(ii) तीव्रगत्या वाहन चालनेन दुर्घटना भवति।

(iii) वाहनस्य समुचित नियन्त्रणाभावेन दुर्घटना भवति।

(iv) चतुष्पथेषु सावधानतया गन्तव्यम्।

(v) सड़क सुरक्षार्थं यातायातस्य नियमानां पालनं कर्तव्यम्।

(vi) वाहनस्य गति: नियन्त्रिता भवेत।

(vii) असावधानतया हानि: भवति।

(viii) राजमार्गे निर्धारितमार्गेषु एव गन्तव्यम्।

❏❏❏❏❏❏

Created by Universal Document Converter

वार्तालाप लेखनं

प्रश्न 1. मञ्जूषातः उचितानि पदानि गृहीत्वा 'धूम्रपान-निवारणाय' इति विषये गुरुशिष्ययोः वार्तालापं पूरयत-

(गन्तुम्, अस्य, तुभ्यं, धूम्रपानं, स्वास्थ्य, प्रेरणीयाः मया, दुर्व्यसनस्य)

सोहनः - गुरुवर! अहं पश्यामि विद्यालये केचन छात्रा .... कुर्वन्ति।

गुरु :- वत्स ! धूम्रपानं .... विनाशकमस्ति।

सोहनः - गुरुवर ! कोऽस्य .... निवारणोपायाः?

गुरुः- पुत्र! जन-जागर्तिरेव .... दुर्व्यसनस्य निवारणोपायः।

सोहनः - गुरुवर! .... किं करणीयम्?

गुरुः- त्वया छात्राः .... यत् अस्माभिः धूम्रपानं न करणीयम्।

सोहनः- गुरुवर! एवमेव करोमि। अधुना अहं .... इच्छामि।

गुरु :- वत्स! महत्वपूर्ण विषयोपरि वार्ता कर्तुं .... धन्यवादं ददामि।

उत्तरम् (i) धूम्रपानं (ii) स्वास्थ्य (iii) दुर्व्यसनस्य
(iv) अस्य (v) मया (vi) प्रेरणीयाः
(vii) गन्तुम् (viii) तुभ्यं

प्रश्न 2. मञ्जूषातः उचितानि पदानि चित्वा पिता-पुत्रयोः सम्भाषणं लिखत-

(आपणम्, शीघ्रम्, पुस्तकम्, फलानि, करोषि, शतम्, स्यूतम्, आगच्छामि)

पिता - पुत्र! किं .... त्वम्?

पुत्रः- .... पठामि, पितः।

पिता -पुत्र ! .... गत्वा आगच्छसि किम्?

पुत्रः- पितः! .... लिखित्वा गच्छामि।

पिता - आपणतः .... आनय।

पुत्रः- .... रुप्यकाणि यच्छतु।

पिता- .... नीत्वा आपणं गच्छ।

पुत्रः- अहं गत्वा शीघ्रम् .... ।

उत्तरम् (i) करोषि (ii) पुस्तकं (iii) आपणं
(iv) शीघ्रं (v) फलानि (vi) शतम्
(vii) स्यूतम् (viii) आगच्छामि

प्रश्न 3. मञ्जूषातः उपयुक्त पदानि गृहीत्वा पुत्रस्य अध्ययनविषये पितापुत्रयोः वार्तालापं पूरयतु।

(अध्यापकः, विषये, गणिते, व्यवस्थां, स्थानान्तरणम्, अध्ययनं, समीचीनं, काठिन्यम्)

पिता - रमेश! तव .... कथं प्रचलति?

रमेशः- हे पितः! अध्ययनं तु........... प्रचलति।

पिता - कोऽपि विषयः एतादृशः अस्ति यस्मिन त्वं .... अनुभवत।

रमेशः - आम् ! गणिते मम स्थितिः सम्यक् नास्ति। यतोहि अस्माकं विद्यालये इदानीं गणितस्य .... नास्ति।

पिता - त्वं पूर्वं तु माम् अस्मिन् .... न उक्तवान्।

रमेशः- पूर्वं तु अध्यापक-महोदयः आसीत् परं एकमासात् पूर्वमेव तस्य .... अन्यत्र अभवत्।

पिता-अस्तु। अहं तव कृते गृहे एवं गणिताध्यापकस्य .... करिष्यामि।

रमेशः- धन्यवादः।

उत्तरम् (i) अध्ययनं (ii) समीचीनं (iii) काठिन्यम्
(iv) गणिते (v) अध्यापकः (vi) विषये
(vii) स्थानान्तरणम् (viii) व्यवस्थां

प्रश्न 4. (तत्, त्वम्, पीडितः, कुत्र, उपचारम्, के, अस्ति, चिकित्सालयभवनम्)

पुनीतः-सुरेश! त्वं .... गच्छसि?

सुरेशः - पुनीत! .... अपि आगच्छ?

पुनीतः - अरे! .... किं भवनम् अस्ति?

सुरेशः - तत् .... अस्ति। आवाम् अपि मातुलं द्रष्टुं चलावः।

पुनीतः - सः केन रोगेण .... अस्ति?

सुरेशः- सः उच्चरक्तचापेन पीडितः ....।

पुनीतः-ते श्वेत प्रावारक धारकाः .... सन्ति? ते किं कुर्वन्ति।

सुरेशः- ते चिकित्सकाः सन्ति। ते .... कुर्वन्ति।

उत्तरम् (i) कुत्र (ii) त्वम् (iii) तत्
(iv) चिकित्सालयभवनम् (v) पीडितः
(vi) अस्ति (vii) के (viii) उपचारं

Created by Universal Document Converter

पदाधारितं वाक्य निर्माणम्

1. **लता** - उद्याने शोभते लता।
2. **भ्राता** - श्यामः रमेशस्य भ्राता।
3. **धेनुः** - नन्दिनी वशिष्ठस्य धेनुः।
4. **श्रद्धावान्** - श्रद्धावान् लभते ज्ञानं।
5. **महत्** - रोगिसेवा महत् कार्य भवति।
6. **मन्त्रिणा** - राजा मन्त्रिणा सह वार्ता करोति।
7. **आत्मनः** - आत्मनः शरीरं भिन्नम्
8. **राज्ञः** - राज्ञः वचनं पालनीयम्
9. **गुरो** - गुरो! मां पाण्यतु।
10. **पितु** - रमेशः पितुः समीपे तिष्ठति।
11. **प्रभवति** - गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।
12. **सह** - रमेशः मित्रेण सह क्रीडति।
13. **सदा** - मोहनः सदा पठति।
14. **एषा** - एषा बालिका नृत्यति।
15. **पठित्वा** - बालकः पठित्वा गृहं गच्छति।
16. **अहम्** - अहम् आपणं गच्छामि।
17. **भवान्** - भवान् कुत्र वसति?
18. **त्वया** - त्वया सह गमिष्यामि।
19. **यावत्** - यावत् सः आगच्छति तावत् रमेशः स्थास्यति।
20. **अभम्** - अयम् मम पुस्तकम्।
21. **तत्र** - तत्र अहं न गतवान्।
22. **उच्चैः** - सिंह उच्चै गर्जति।
23. **प्रातः** - प्रातः भ्रमणं कर्त्तव्यम्
24. **एकदा** - एकदा सः मृगम् पश्यत्।
25. **मम** - सा मम भगिनी।

❑❑❑❑❑❑❑

Created by Universal Document Converter

आदर्श प्रश्न-पत्र - 2022-2023

विषय : संस्कृत

कक्षा - 10

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80 अंक**

खण्ड-अ

प्र. 1. अधोलिखित प्रश्नानाम् उचितं विकल्पं चिनुत- 12×1 = 12

(i) **लवकुशयोः वंशस्य कर्ता कः?**
(अ) सूर्यः (ब) चन्द्रः
(स) वशिष्ठः (द) हरिश्चन्द्रः

(ii) **नराणां प्रथमः शत्रुः कः?**
(अ) शमः (ब) क्रोधः
(स) गुणः (द) द्वेषः

(iii) **'अहिभुक्' इति कः कथ्यते?**
(अ) कपोतः (ब) पिकः
(स) काकः (द) मयूरः

(iv) **कः पिपासितः म्रियते?**
(अ) काकः (ब) चातकः
(स) बकः (द) पिकः

(v) **वाचि किं भवेत?**
(अ) अवक्रता (ब) वक्रता
(स) सरलता (द) उग्रता

(vi) **एकान्ते <u>कांतारे</u> क्षणमपि सञ्चरणं स्यात्। रेखांकित पदस्य अर्थम् अस्ति-**
(अ) वने (ब) जने
(स) गहने (द) नगरे

(vii) **'दुर्जनः' अस्मिन पदे उपसर्गं चिनुत-**
(अ) निर् (ब) दुस्
(स) निस् (द) दुर

(viii) **'भू+ल्युट' इत्यनेन निष्पत्तिः जायते-**
(अ) भानम् (ब) भूनम्
(स) भवनम् (द) भगनम्

(ix) **'परितः' शब्दस्य योगे विभक्तिः भवति-**
(अ) द्वितीया (ब) पंचमी
(स) चतुर्थी (द) षष्ठी

(x) **कति कारकाणि?**
(अ) पञ्च (ब) षट्
(स) अष्ट (द) दश

(xi) **रमेशः .... आवसति।**
(अ) जयपुरे (ब) जयपुरस्य
(स) जयपुरम् (द) जयपुरेन्

(xii) **अधस्तनेषु तृतीया विभक्तिः कारणम् अस्ति-**
(अ) नमः (ब) सह
(स) अभितः (द) प्रति

प्र. 2. (अ) प्रकृति प्रत्ययोः समुचित प्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत- 3×1=3

(i) ग्रामं .... ईश्वरं स्मरति। (गम् + शतृ)
(ii) .... पुस्तकं पठति। (बालक +टाप्)
(iii) व्याघ्रः .... अस्ति। (हन् + तव्यत्)

(आ) समुचितैः अव्यय पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत- 3×1=3

(i) भूकम्पित समये .... गमनमेव उचितं भवति। (बहिः/ अन्तः)
(ii) .... समयस्य सदुपयोग करणीय। (सदा/कदा)
(iii) सः .... गीत गायति। (नीचैः/उच्चैः)

प्र. 3. अधोलिखितं अपठित गद्याशं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम् उतराणि यथानिर्देशं लिखत-

परेषाम् उपकारः परोपकारः उच्यते। "सर्वः स्वार्थं समीहते" इत्यपि कस्यचित् कवेः उक्तिः अस्ति। स्वार्थाय सर्वेऽपि प्राणिनः जीवन्ति। किन्तु यस्य जीवनम् अन्येभ्यः अस्ति, अपरेषां प्राणिनां सुखाय यः प्रयतते, कष्टं सहते च वस्तुतः तस्यैव जीवनं सार्थकम् अस्ति। पश्य, गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति, अतः जनाः "भातर" इति वदन्ति। नदी अपि स्वजलं स्वयं न पिबति,

Created by Universal Document Converter

अन्येषां प्राणिनां कृते ददाति। मेघान् पश्यत। स्वजलं सर्वेभ्यः वितरन्ति। पुष्पाणि सर्वेभ्यः सुगन्धं वितरन्ति। वृक्षाः फलानि प्रयच्छन्ति। मातृ समा उपकारिणी का विद्यते जगति? अतः स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनम् एव वरम् ।

प्रश्ना :

(i-ii) एकपदेन उत्तरत -

(i) सर्वे किं समीहन्ते? 1

(ii) काः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति? 1

(iii-v) पूर्णवाक्येन उत्तरतः-

(iii) कः परोपकारः कथ्यते? 1

(iv) सर्वेऽपि प्राणिनः कस्मै जीवन्ति? 1

(v) किं वरं विद्यते? 1

(vi) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। 1

(vii) उपर्युक्त गद्यांशस्य संक्षिप्तीकरणं कुरुत। 1

(viii) 'गावः' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं गद्यांशात् चित्वा लिखत। 1

(ix) 'निरर्थकम्' इत्यस्य गद्यांशे विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत। 1

(x-xii) अधोलिखित प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतमाध्यमेन लिखत-

(x) तिरूशब्दः कस्य वाचकः?

(xi) कीदृशं कर्म व्यायामसंज्ञितं कथ्यते?

(xii) कीदृशः छात्रः आदर्श छात्रः कथ्यते?

खण्ड - ब

प्र. 4. अधोलिखित पदयोः सन्धि विच्छेदं कृत्वा सन्धेः नामापि लिखत-

(i) कोऽत्र (ii) सच्चितः 1+1=2

प्र. 5. अधोलिखितपदयोः सन्धि कृत्वा सन्धेः नामापि लिखत्

(i) प्रकृतिः+एव (ii) षट् + आननः 1+1=2

प्र. 6. अधोलिखित रेखाङ्कितपदयोः समस्त पदानां विग्रहं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत- 1+1=2

(i) <u>यथेच्छम्</u> भोजनं कुरु।

(ii) <u>चन्द्रशेखरः</u> कैलाशे वसति।

प्र. 7. अधोलिखित पदयोः विग्रहपदानां समासं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत- 1+1=2

(i) <u>सीता च रामः च</u> वनम् अगच्छताम्।

(ii) <u>विमूढा धीः यस्य सः</u> अपक्वं फलं भुङ्क्ते।

प्र. 8. अधोलिखितौ संख्यावाचि शब्दौ संस्कृते लिखत- 1+1=2

(i) 113 (ii) 2001

प्र. 9. रेखाङ्कित पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत- 1+1=2

(i) <u>सुराधिपः</u> ताम् अपृच्छत्।

(ii) <u>तत्वार्थस्य</u> निर्णयः विवेकेन कर्तुं शक्यः।

प्र. 10. निर्देशानुसारं शब्दरूपाणि लिखत- 1+1=2

(i) युष्मद शब्दस्य षष्ठी विभक्तिः।

(ii) नदी शब्दस्य तृतीया विभक्तिः।

प्र. 11. यथानिर्दिष्ट रूपाणि लिखत- 1+1=2

(i) लभ् धातो लट्लकारस्य मध्यम पुरुषे।

(ii) लिख् धार्तो लृट लकारस्य उत्तम पुरुषे।

प्र. 12. अधोलिखित वाक्ययोः शुद्धं कृत्वा लिखत- 1+1=2

(i) हरि <u>बैकुण्ठे</u> अधिशेते।

(ii) सः <u>नेत्रस्य</u> काणः अस्ति।

प्र. 13. अधोलिखितस्य पद्यांशस्य संस्कृते भावार्थं लिखत- 2

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपुः।
नास्त्युद्यम समो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।

अथवा

पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याधनं महत्।
पिताऽस्य किं तपस्तेये इत्युक्तिस्तत्कृतज्ञता।।

प्र. 14. अधोलिखितश्लोकस्य अन्वयं कुरुत- 2

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छाया समन्वितः।
यदि देवात् फलं नास्ति छायाकेन निवार्यते।।

प्र. 15. 'विचित्रः साक्षीः' इति कथायाः सारः हिन्दी भाषायां लिखत। 2

प्र. 16. स्वपाठ्य पुस्तकात् प्रश्न-पत्र अतिरिच्य द्वौ श्लोकौ लिखत। 2

प्र. 17. अधोलिखितस्य पठित गद्यांशस्य हिन्दी भाषया सप्रसंगम् अनुवादं लिखत- 4

न्यायधीशो बंकिमचन्द्रः उभाभ्यां पृथक्-पृथक् विवरणं श्रुतवान्। सर्वं वृत्तमवगत्य स तं निर्दोषम् अमन्यत आरक्षिणं च दोषभाजनम्। किन्तु प्रमाणाभावात् स निर्णेतु नाशक्नोत्। लतोऽसौ

Created by Universal Document Converter

तो अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्।

अथवा

एकोत्तर द्वि सहस्र ख्रीष्टाब्दे (2001 ईस्वीये वर्षे) गणतन्त्र-दिवस-पर्वाणि यदा समग्रमपि भारत राष्ट्रं नृत्य-गीतवादित्राणाम् उल्लासे यग्नमासीत् तदाक स्मादेव गुर्जर-राज्यं पर्याकुलं, विपर्यस्तम्, क्रन्दनविकलं, विपन्नञ्च जातम्।

प्र. 18. अधोलिखित पद्यांशस्य हिन्दीभाषया सप्रसंगम् अनुवादं लिखत- 4

कोधो हि शत्रु: प्रथमोनराणां, देहस्थितो देह विनाशाय।

यथास्थित: काष्ठगतो वह्नि:, स एव वन्हिर्दह्यते शरीरम्।।

प्र. 19. अधोलिखितस्थ नाट्यांशस्य सप्रसंगं हिन्दीभाषया अनुवादं लिखत- 3

चाणक्य : श्रेष्ठिन्! स्वागतं वे। अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धि लाभा:

चन्दनवास : (आत्मगतम्) अत्यादर: शङ्कनीय:। (प्रकाशम्) अथ किम्। आर्यस्य प्रसादेन अखण्डित्वा मे वाणिज्या।

चाणक्य : भो श्रेष्ठिन् ! प्रीताभ्य: प्रकृतिभ्य: प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजान:

चन्दनदास: आज्ञापयतु आर्य:, किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते इति।

चाणक्य: भो श्रेष्ठिन् ! चन्द्रगुप्तराज्यभिदे न नन्दराज्यम्।

अथवा

लव: तस्या: द्वै नामनी।

विदूषक कथमिव?

लव: तपोवनवासिनो देवीति, भगवान वाल्मीकिर्वधूरिति।

राम: अपि च इतस्तावद् वयस्य।

मूहर्त्तमात्रम्

विदूषक: (उपसृत्य) आज्ञापयतु भवान्।

राम: अपि कुमारयोरनयोरस्माकं च सर्वथा समरूप: कुटुम्बवृतान्त:।

प्र. 20. क्रम रहितानां षड्वाक्यानां क्रमपूर्वकं संयोजनं कुरुत।3

(i) मूषक: परिश्रमेण जालम् अकृन्तत्।

(ii) एकदा स: जाले बद्ध:।

(iii) सिंह: जालात्-मुक्त: भूत्वा मूषकं प्रशंसन् गतवान्।

(iv) एकस्मिन् वने एक: सिंह: वसति स्म।

(v) स: सम्पूर्ण प्रयासम् अकरोत् परं बन्धनात् न मुक्त:।

(vi) तदा तस्य स्वरं श्रुत्वा एक: मूषक: तत्र आगच्छत्।

अथवा

अधोलिखित पञ्चशब्देषु कथन त्रयाणां शब्दानां संस्कृते वाक्य निर्माणं कुरुत-

[तत्र, सह, त्व, पठितुम्, गिरे:]

प्र. 21. स्व योगेश कुमार: मत्वा राजकीय उच्च माध्यमिक-विद्यालयस्य अजयमेरु नगरस्थ प्रधानाचार्याय चरित्र प्रमाण पत्र प्राप्त्यर्थ संस्कृते प्रार्थना पत्र में लिखत। 4

अथवा

भवान् सुरेश: मातरं प्रति अधोलिखितं पत्रं मञ्जूषापद सहायतया लिखत।

[वार्षिकोत्सव:, अभिनयम्, मुख्यातिथि:, कुशलम्, अध्ययनम्, पितरम्, भवदीय: सर्वेभ्य:]

चारुनगरात्

दिनांका: ....

पूजनीया: मातृचरणा:।

नमोनम::। अत्र .... तत्रास्तु। मम विद्यालये ...... आसीत्। तत्र अहम् एकम् .... कृतवान्। मन्त्रि महोदय: रूपेण आगतवान्। मम् .... सम्यक् चलति। गृहे नमोनम:। अहं .... प्रणमामि।

....

सुरेश:

प्र. 22. अध: प्रदत्त चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन अष्टवाक्यानि निर्माय लिखत-

[वर्षा, मम, मेघ:, छत्रम्, गर्ज, नीड़े, विद्यालय:, पक्षिशावक, वृक्षा: जलमयम्]

अथवा

मञ्जूषात: उपयुक्त पदानि गृहीत्वा पुत्रस्य अध्ययनविषये पितापुत्रयो: वार्तालापं पूरयतु।

[अध्यापक:, विषये, गणिते, व्यवस्थां, स्थानान्तरणम्, अध्ययनं, समीचीनं, काठिन्यम्]

Created by Universal Document Converter

पिता - रमेश ! तव .... कथं प्रचलति?

रमेशः- हे पितः! अध्ययनं तु .... प्रचलति।

पिता - कोऽपि विषयः एतादृशः अस्ति यस्मिन् त्वं .... अनुभवति

रमेशः - आम् ! गणिते मम स्थितिः सम्यक् नास्ति। मतोहि अस्माकं विद्यालये इदानीं गणितस्य .... नास्ति।

पिता - त्वं पूर्वं तु माम् अस्मिन् .... न उक्तवान्।

रमेशः - पूर्वं तु अध्यापक - महोदयः आसीत् परं एकमासात् पूर्वमेव तस्य .... अन्यत्र अभवत्।

पिता- अस्तु ! अहं तव कृते गृहे एव गणिताध्यापकस्य .... करिष्यामि।

रमेशः - धन्यवादः।

प्र. 23. अधोलिखितेषु वाक्येषु केषांचन चतुर्णां संस्कृत भाषया अनुवाद करोतु - 4

(i) विद्या विनम्रता प्रदान करती है।

(ii) यह गोपाल का भाई है।

(iii) मेरी कक्षा में 65 छात्र है।

(iv) वृद्ध पैर से लँगड़ा है।

(v) वह जल से मुख को धोता है।

(vi) गंगा हिमालय से निकलती है।

***

Created by Universal Document Converter

आदर्श प्रश्न-पत्र - 2022-2023

टेलीग्राम चैनल ज्वाइन करें

विषय : संस्कृत

कक्षा - 10

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80 अंक**

खण्ड-अ

प्र. 1. अधोलिखित प्रश्नानाम् उचितं विकल्पं चिनुत-

(i) **दुर्वहमत्र जीवितं जातम्।** 1

(अ) कठिनम् (ब) सरलम्

(स) निर्मल (द) दुष्करम्

(ii) **सर्वदा सर्व कार्येषु का बलवती।** 1

(अ) बुद्धिमति: (ब) भामिनी

(स) शक्ति: (द) बुद्धि:

(iii) **अम्बा।** 1

(अ) मित्र (ब) जननी

(स) पृथ्वी (द) शत्रु

(iv) **लवकुशौ कस्य पुत्रौ आस्ताम्?** 1

(अ) रामस्य (ब) भरतस्य

(स) लक्ष्मणस्य (द) हनुमतस्य

(v) **चन्दनदासाय क: भयं दर्शयति?** 1

(अ) चन्द्रगुप्ता (ब) चाणक्य:

(स) नन्द: (द) अमात्य:

(vi) **कस्य शोभा एकेन राजहंसेन भवति?** 1

(अ) कूपस्य (ब) सरस:

(स) गृहस्य (द) भवनस्य

(vii) **'आगमनम्' अस्मिन् पदे उपसर्गं चिनुत -** 1

(अ) आङ् (ब) उद्

(स) गमनम् (द) अधि

(viii) **अपहरति पदे क: उपसर्ग:** 1

(अ) उप (ब) अव

(स) अप् (द) आ

(ix) **'परित:' शब्दस्य योगे विभक्ति: भवति-** 1

(अ) चतुर्थी (ब) पंचमी

(स) द्वितीया (द) तृतीया

(x) **कति कारका:?** 1

(अ) सप्त (ब) अष्ट

(स) नव (द) षट्

(xi) **............ परित: वृक्षा: सन्ति।** 1

(अ) ग्रामस्य (ब) ग्रामम्

(स) ग्रामात् (द) ग्रामेण

(xii) **अधस्तनेषु द्वितीया विभक्ते: कारणम् अस्ति-** 1

(अ) सह (ब) अभित:

(स) नम: (द) वषट्

प्र. 2. (अ) प्रकृति प्रत्ययो: समुचित प्रयोगेण रिक्तस्थानाति पूरयत-

(i) कविषु कालिदास: .... सन्ति। (श्रेष्ठ + तमप्) 1

(ii) ते एव................सन्ति। (बुद्धि +मतुप्) 1

(iii) .... वै मधु विन्दति (चर + शतृ) 1

(आ) समुचितै: अव्यय पदै: रिक्तस्थानानि पूरयत-

(i) यत्र गच्छति .... तिष्ठति। (तत्र/इव) 1

(ii) अहम् .... ग्रामं गच्छामि। (अपि/उच्चै:)

(iii) ग्रामात् .... नदी प्रवहति। (बहि:/नीचै:)

प्र. 3. अधोलिखितं अपठित गद्यांशं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम् यथा निर्देशम् उतराणि लिखत-

अस्मिन् संसारे असंख्या: भाषा: सन्ति। तासु भाषासु संस्कृत भाषा सर्वोत्तमा विद्यते। संस्कृता परिष्कृता दोषहरिता भाषा एवं संस्कृत भाषा कथ्यते। इथमेव भाषा देवभाषा, गीर्वाणगी:, लुखानी इत्यादिभि: शब्दै संबोध्यते। एतानि नामानि एवं अस्या: भाषाया: महत्त सूचयन्ति। संस्कृतभाषा जगत: सर्वासा भाषाणा जननी अस्ति। सर्वभाषाणां मूलरूप ज्ञानाय एतस्या आवश्यकता भवति। यादृशं महत् साहित्यं संस्कृत - भाषाया: अस्ति तादृशं अन्यासां भाषाणां नास्ति। अस्यामेव भाषायां ब्राह्मण-ग्रन्था: आख्यका: अध्यात्मविषय प्रतिपादिका उपनिषद:, वेदादयश्च

Created by Universal Document Converter

सन्ति। आदिकाव्य रामायण वीरकाव्य महाभारतमपि संस्कृतस्य गौरवं वर्धयतः। अनयोः ग्रन्थयोः विषयं गृहीत्वा एव विशालस्य (संस्कृत) साहित्यस्य रचना संजाता।

प्रश्ना :

(i-ii) एकपदेन उत्तरत -

(i) सर्वोत्तमा भाषा का विद्यते? 1

(ii) वीरकाव्यम् किम् कथ्यते? 1

(iii-v) पूर्णवाक्येन उत्तरतः-

(iii) कीदृशी भाषा संस्कृत भाषा कथ्यते? 1

(iv) जगतः सर्वासां भाषाणां जननी का? 1

(v) किम् एवं संस्कृतभाषा कथ्यते? 1

(vi) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। 1

(vii) उपर्युक्त गद्यांशस्य संक्षिप्तीकरणं कुरुत। 1

(viii) असंख्या इति विशेष्यपदं चित्वा लिखत- 1

(ix) जगत् इत्यस्य पर्यायपदं चित्वा लिखत- 1

(x-xii) अधोलिखित प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतमाध्यमेन लिखत-

(x) सदा कः पथ्यः?

(xi) कुशलवयोः वशस्य कर्त्ता कः?

(xii) अस्माभिः कीदृशः वृक्षः सेवितव्य?

खण्ड - ब

प्र. 4. अधोलिखित पदयोः सन्धि विच्छेदं कृत्वा सन्धेः नामापि लिखत-

(i) अन्योऽपि (ii) यत्रास्ते 1+1=2

प्र. 5. अधोलिखितपदयोः सन्धि कृत्वा सन्धेः नामापि लिखत्

(i) कः+अत्र (ii) इति + आत्मनः 1+1=2

प्र. 6. अधोलिखित रेखाङ्कितपदयोः समस्त पदानां विग्रहं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत- 1+1=2

(i) सः एव धन्यः यः <u>शरणम् आगतस्य</u> रक्षां करोति।

(ii) आलस्य हि मनुष्याणा <u>शरीरस्थो</u> महान् रिपुः।

प्र. 7. अधोलिखित पदयोः विग्रहपदानां समासं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत- 1+1=2

(i) <u>हरिततरुणां</u> लतिलतानां माला रमणीया।

(ii) <u>समलं</u> धरातलम्

प्र. 8. अधोलिखितौ संख्यावाचि शब्दौ संस्कृते लिखत-1+1=2

(i) 165 (ii) 1585

प्र. 9. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कित पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत- 1+1=2

(i) त्वम् <u>मानुषात्</u> विभेति।

(ii) <u>सुराधिपः</u> ताम् अपृच्छत्।

प्र. 10. निर्देशानुसारं शब्दरूपाणि लिखत- 1+1=2

(i) अस्मद् शब्दस्य तृतीयां एकवचनम्।

(ii) पितृ शब्दस्य षष्ठी द्विवचनम्।

प्र. 11. निम्नलिखितधातूनां यथानिर्दिष्ट रूपाणि लिखत- 1+1=2

(i) क्रीड् धातो! लट् लकारस्य उत्तमपुरुषे।

(ii) भू धातोः लङ् लकारस्य प्रथमपुरूषे।

प्र. 12. अधोलिखित वाक्ययोः शुद्धं कृत्वा लिखत- 1+1=2

(i) <u>बालकम्</u> मोदकानि रोचन्ते।

(ii) सीता <u>गीतायै</u> सह पठति।

प्र. 13. अधोलिखितस्य पद्यांशस्य संस्कृते भावार्थं लिखत- 2

सम्पतौ च विपतौ च महतामेकरूपता।
उदये सविता रक्तो रक्तच्चास्तमये तथा।।

अथवा

विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम्।
अश्वश्चेद् धावने वीर भारष्य वहने खरः।।

प्र. 14. अधोलिखितश्लोकस्य अन्वयं कुरुत- 2

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।

प्र. 15. 'बुद्धिर्बलवती सदा' इति कथायाः सारः हिन्दी भाषायां लिखत। 2

प्र. 16. स्वपाठ्य पुस्तकात् प्रश्न-पत्र अतिरिच्य द्वौ श्लोकौ लिखत। 1+1=2

प्र. 17. अधोलिखितस्य पठित गद्यांशस्य हिन्दी भाषया सप्रसंगम् अनुवादं लिखत- 4

यद्यपि दैवः प्रकोपो भूकम्पो नाम, तस्योपशमनस्य न कोऽपि स्थिरोपायो दृश्यते। प्रकृति समक्षमद्यापि विज्ञानगर्वितो मानवः वामनकल्प एव तथापि भूकम्परहस्यज्ञाः कथयन्ति यत् बहुभूमिक भवननिर्माणं न करणीयम्। तटबन्धं निर्माय बृहन्मात्रं

Created by Universal Document Converter

नदीजलमपि नैकस्मिन् स्थले पुञ्जीकरणीयम् अन्यथा असन्तुलनवशाद् भूकम्पस्सम्भवति। वस्तुत: शान्तानि एव पञ्चतत्त्वानि क्षितिजलमावकसमीरगगनानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां कल्पन्ते। अशान्तानि खलु तान्येव महाविनाशम् उपस्थापयन्ति।

अथवा

''भो वासव ! पुत्रस्य दैन्य दृष्ट्वा अहं रोदिमि। स: दीन इति जानन्नमि कृषक: तं बहुथा मीडयति। स: कृच्छेण भारमुद्वहति। इतरमिव धुरं वोदु स: न शक्नोति। सतत् भवान् पश्यति न?'' इति प्रत्यवोचत्।

'' भद्रे ! नूनम्। सहस्राधिकेषु पुत्रेषु सत्स्वपि तव अस्मिन्नेव एतादृशं वात्सल्य कथम्?'' इति इन्द्रेण पृष्टा सुरभि: प्रत्यवोचत्।

प्र. 18. अधोलिखित पद्यांशस्य हिन्दीभाषया सप्रसंगम् अनुवादं लिखत- 4

वायुमण्डलं भृशं दूषितं न हि निर्मल जलम्।
कुत्सितवस्तुमिश्रितं भक्ष्यं समलं धरातलम्।।
करणीयं बहिरन्तर जगति तु बहु शुद्धीकरणम्। शुचि....।।

अथवा

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरूद्धमपि भोजनम्।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोष परिपच्यते।

प्र. 19. अधोलिखितस्थ नाट्यांशस्य सप्रसंगं हिन्दीभाषया अनुवादं लिखत- 4

उभो - (अनिच्छां नाटयत:) राजन्।
अलमतिदाक्षिण्येन।

राम: - अलमतिशालीनतया।

राम: - एष भवतो: सौन्दर्यावलोक जनितेन कोतूहलेन पृच्छामि - क्षत्रियकुलपितमहयो: सूर्यचन्द्रयो: को वा भवतोर्पशस्य कर्त्ता?

लव: - भगवन् सहस्त्रदीधिति:।

अथवा

चाणक्य : वत्स मणिकार श्रेष्ठिनं चन्दनदासमिदानी द्रष्टुमिच्छामि।

शिष्य : - तथेति (निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह प्रविश्य) इत:इत: श्रेष्ठिन्। स्वागत ते। अमि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धिलाभा?

चन्दनदास:- (आत्मगतम्) अत्यादर : शङ्कनीय:। (प्रकाशम्) अथ किम्। आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता में वणिज्या।

प्र. 20. क्रम रहितानां षड्वाक्यानां क्रमपूर्वकं संयोजनं कुरुत।3

(i) औषधं खादित्वा पुत्र: नीरोग अभवत्।

(ii) एकस्मिन् ग्रामे एक माता निवसति स्म।

(iii) माता स्वपुत्रं माधवं चिकित्सालयं नीतवती।

(iv) तस्या: माधव: नामक: पुत्र: आसीत्।

(v) चिकित्सक: माधवाय औषधं दत्तवान्।

(vi) एकदा माधव: ज्वरपीडित: अभवत्।

अथवा

मञ्जूषायां प्रदत्तेषु पञ्चशब्देषु केचन त्रयाणां शब्दानां सहायता वाक्यानि रचयत-

[गन्तुम्, कस्य, अपि, गुरो, सर्वत:]

प्र. 21. स्व गोविन्द मत्वा राजकीय उच्च माध्यमिक-विद्यालय जोधपुरस्य प्रधानाचार्याय अस्वस्थताकारणात् पञ्चदिवसस्य अवकाशार्थं संस्कृते प्रार्थनापत्रं लिखत। 4

अथवा

भवान् दीपक: अस्ति। परीक्षापरिणामस्य विषये स्वमितरं प्रति लिखिते अस्मिन् पत्रे मञ्जूषाया: उचितपदानि चित्वा रिक्तस्थानि पूरयतु।

[नमोनम:, प्रतिशतं, अधिकम्, नवनवति:, चरणस्पर्श:, अहम्, भवान्, अभ्यासेन, परिणाम:, दीपक:]

गांधीविद्यामन्दिरत:

दौसा

पूज्य पितृमहोदय।

(i) अतीव हर्षस्य विषयोऽस्ति यत् मम अद्र्धवार्षिक्या: परीक्षाया: (ii) .... आगत: अह नवति: (iii) .... अङ्कान् प्राप्तवान्। किन्तु इदं ज्ञात्वा (iv)............ अपि चिन्तित: भविष्यति यत् गणितविषये (v)............ सुष्ठ अङ्कान् प्राप्तुं समर्थ: न अभवम्। अद्यत: अहम् (vi)........... अभ्यासं करिष्यामि। आशासे यत् (vii)............ भवत: आशीर्वादेन च आगामि वार्षिकपरीक्षायाम् अमि (viii)............ प्रतिशतं अंकान् प्राप्स्यामि। मातरम् अग्रजम् प्रति अमि मम (ix)............ कथनीय।

भवत: पुत्र

(x)............

प्र. 22. अध: प्रदत्त चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया संस्कृतेन अष्ट वाक्यानि निर्माय लिखत- 4

[उपवनम्, पुष्पाणि, नारी, सूर्य:, खगा:, आकाशे,

Created by Universal Document Converter

कलखम्, राजमार्ग, बालकः, बालिका, भ्रमन्ति]

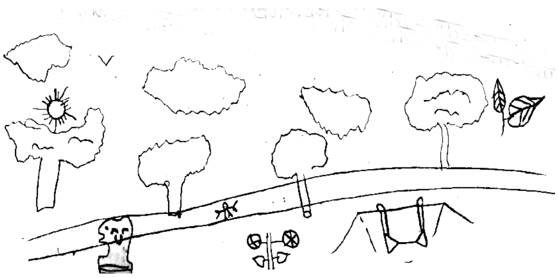

अथवा

मञ्जूषातः उपयुक्त पदानि गृहीत्वा पिता-पुत्रयोः मध्ये वार्तालापं पूरयतु-

[आपणम्, शीघ्रम, पुस्तकम्, फलानि, करोषि, शतम्, स्यूतम्, आगच्छामि]

पिता - पुत्र ! किं .... त्वम्?

पुत्रः - पठामि, पितः।

पिता - पुत्र ! .... गत्वा आगच्छसि किम्?

पुत्रः - पितः ! .... लिखित्वा गच्छामि।

पिता - आपणत .... आनय।

पुत्रः - .... रूप्यकाणि यच्छतु।

पिता - .... नीत्वा आपणं गच्छ।

पुत्रः- अह गत्वा शीघ्रम्............।

प्र. 23. अधोलिखितेषु वाक्येषु केषांचन चतुर्णां वाक्यानां संस्कृत भाषया अनुवाद करोतु - **4**

(i) वे देश के लिए धन देते है।

(ii) वृक्ष पर पक्षी है।

(iii) किशोर स्वभाव से मेहनती है।

(iv) गंगा हिमालय से निकलती है।

(v) राम के साथ सीता वन जाती है।

(vi) ग्राम के चारों और खेत है।

***

Created by Universal Document Converter